चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की एम०एड० उपाधि के

आंशिक अभिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबन्ध

वर्ष-2020

शोध पर्यवेक्षक	शोधकर्ता
डॉ० राजीव अग्रवाल	आशुतोष पटवा
(एसोसिएट प्रोफेसर)	अनुक्रमांक-30118183003

शिक्षक-शिक्षा विभाग

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

घोषणा पत्र

मैं यह घोषणा करता हूँ कि एम०एड० उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध शीर्षक चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन मेरा मौलिक कार्य है| जिसे डॉ० राजीव अग्रवाल के सुयोग्य निर्देशन में पूर्ण किया|

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि इसमें प्रयुक्त तथ्य मेरे द्वारा एकत्र किये गये हैं| मेरी सम्पूर्ण जानकारी के अनुसार इस लघु शोध प्रबन्ध को कहीं अन्यत्र किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है|

दिनांक- 28/10/2020 शोधकर्ता

स्थान-अतर्रा

(आशुतोष पटवा)

डॉ० राजीव अग्रवाल
(एसोसिएट प्रोफ़ेसर)

शिक्षक-शिक्षा विभाग
अतर्रा पीजी कॉलेज अतर्रा, बाँदा

यह प्रमाणित किया जाता है कि आशुतोष पटवा द्वारा चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय शीर्षक के अन्तर्गत किया गया लघु शोध प्रबन्ध कार्य मेरे मार्गदर्शन तथा निरीक्षण में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की एम०एड० उपाधि हेतु किया गया कार्य है|

मेरी जानकारी और विश्वास में प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध शोधार्थी का मौलिक प्रयास है।

दिनांक- 28/10/2020

शोध पर्यवेक्षक

स्थान-अतर्रा

(डॉ० राजीव अग्रवाल)

प्राक्कथन

आज हमारे देश में तथाकथित जागरूक लोग जहाँ चमकीली-भड़कीली, नखरीली-खर्चीली, किन्तु सर्वनाशकारी शिक्षण पद्धति के स्कूलों-कॉलेजों से प्रवाहित भिन्न-भिन्न तरह की डिग्रियां हासिल करने के बहाव में बह रहें हैं, वहीँ परिषदीय विद्यालय उस बहाव के विपरीत दिशा में इत्मीनान से तैर रहें हैं बहाव के विपरीत दिशा में सिर्फ अपनी जान लेकर अकेले तैरना भी निरापद नहीं हैं, जबकि अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय पलकों पर तैर रहा है|

धारा के विरुद्ध अन्य विद्यालयों से युद्ध करते हुए अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को मानना है की वर्तमान समय की समस्त समस्याओं की जड़ अन्य विद्यालय हैं, जो डिग्रियाँ बांटती हैं और लोगों को स्वार्थी बनाती हैं परिषदीय विद्यालयों शिक्षा के माध्यम से कार्य के अनुरूप अंक पत्र प्रदान करती है|

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का शीर्षक 'चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन' है| प्रस्तुत लघु शोध में पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है-

अध्याय विवरण

प्रथम अध्याय में अध्ययन परिचय पर प्रभाव अरिलाक्षित किया गया गया है|

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण के अन्तर्गत शोध, समाचार, लेखों पर प्रकाश डाला गया है|

तृतीय अध्याय में शोध अध्ययन की प्रक्रिया के अवगत कराया गया है|

चतुर्थ अध्याय में चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय के बारे में बताया गया है|

पंचम अध्याय में शोध अध्ययन से सम्बन्धित निष्कर्ष एवं सुझाव को प्रस्तुत किया गया है|

प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षा संकाय के एसोसियट प्रोफ़ेसर, **डॉ० राजीव अग्रवाल** जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ| विद्धत **डॉ० राजीव अग्रवाल** जी ने स्नेह, सहानुभूति, आशीर्वाद, ज्ञान, सतत सक्रीय निर्देशन प्रदान किया जिसके फलस्वरूप मैं यह लघु शोध- प्रबन्ध प्रस्तुत करने में सफल हो सका| वस्तुत: मधुर, सरल व व्यक्तित्व के धनी विदधात गुरुवर जिनसे मुझे लघु शोध की जटिलताओं के निराकरण में महत्वपूर्ण सहायता मिली मैं उनका तहेदिल से आभारी हूँ|

शिक्षा संकाय के समस्त गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ| जिन्होंने मुझे अपना सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया| प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध को सम्पन्न कराने में जिन लोगों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सयोग मिला उनके प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ|

आशुतोष पटवा

विषयानुक्रमणिका

चित्र सूची

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

- प्रस्तावना
- शिक्षा: विकास की प्रक्रिया
- भारत में शिक्षा का विकास
- प्राथमिक विद्यालय का स्वरूप
- उत्तर प्रदेश में परिषदीय विद्यालय की स्थिति
- परिषदीय विद्यालयों की समस्याएं
- समस्या का प्रादुर्भाव
- समस्या कथन
- अध्ययन का औचित्य
- समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या
- अध्ययन के उद्धेश्य
- अध्ययन का परिसिमांकन
- अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

मानव को मानवीय गुणों से सुशोभित करने के समस्त संसाधनों में शिक्षा सर्वोत्तम साधन है| वह व्यक्ति में व्यवहारिकता एवं आदर्श का सुन्दर समन्वय करती है परन्तु वर्तमान में प्रचलित शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा के मूल भावों से भटक कर पाश्चात्य शिक्षा जगत एवं प्रणाली को अपना रही है| आज के तथाकथित शिक्षित एवं विद्वान भारतीय संस्कृति के मूल भावना को नहीं समझा पा रहे है| जब अपनी शिक्षा प्रणाली में हम भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं भारतीय विद्वानों के शैक्षिक विचारों को कोई स्थान नहीं देते तो भारत की शिक्षा उन उच्च आदर्शों से अप्राणित कैसे हो सकती है जो भारत को भारत बनाती है|

आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन माना जा रहा है परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती| इस सम्बन्ध में महान विचारक डॉ. राधाकृष्णनजी नेकहा है- "शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है| इसे शिक्षित व्यक्ति को मूल्य का विचार भी प्रदान करना है| वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है अत: जिस समुदाय में वे रहते है उस समुदाय के प्रति भी उनका सामाजिक उत्तदायित्व है|"

आज भारत में फैली सामाजिक बुराइयों, नैतिकता का ह्रास, अनुशासनहीनता, मूल्यों का ह्रास आदि समस्याओं का हल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है, इसके लिए शिक्षा प्रणाली में भारत की जनता की आवश्यकता एवं आकांक्षा के अनुरूप बदलाव लाना होगा| हमारी भारतीय आर्य परंपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्था के रूप में गुरूकुलम एवं पाठशालाएं केंद्र स्थान पर थे| आज 200 वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी देश में नहीं दी जाती थी| अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों में सबसे अग्रणी था| मनुष्य के आतंरिक गुणों को उजागर करके उसके दोषों का निर्मूलन करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा|
ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुन: जीवित किये बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्वार असम्भव है| अत: इस परम्परा को पुन: प्रस्थापित करना अति आवश्यक है तभी, मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई, उससे हम को बचा पायेंगे|

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है| जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है| वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है, प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है| धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है, तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है, और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है| बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है| शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुरभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है| संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है, क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके, उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है| सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज और समुदाय बालक की सहायता करते हैं| बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर के अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके| बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक, व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है|
समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है| ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे| क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा, शासक, प्रशासक देंगे| वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार व्यापारी देंगे| शूद्र छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म, चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति की क्षमता वह आतंरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गयी| वर्णों के आधार पर तदानुरूप चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए, जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक है| ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र-धर्म| कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई, तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ| जो आज की प्रायोगिक युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में ही हो, शिक्षा में हो या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है| इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है, जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके,

और इस प्रायोगिक युग में सकारात्मक सोच का विकास कर सके| वर्तमान समय में उच्च शिक्षा की जो स्थिति है उसमे कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारत में शिक्षा के प्रति रुझान प्राचीन काल से ही देखने को मिलता है| प्राचीन काल में गुरुकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध मठों में शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था होती थी| तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा, तक्षशिला एवं बल्लभी की गणना की जाती है| मध्यकालीन भारत में शिक्षा मदरसों में प्रदान की जाती थी| मुग़ल शासकों ने दिल्ली, अजमेर, लखनऊ एवं आगरा में मदरसों का निर्माण करवाया| भारत में आधुनिक व पाश्चात्य शिक्षा की शुरुआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल से हुई|

1.1.2.1 प्राचीन काल में शिक्षा

भारत की प्राचीन शिक्षा अध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा, मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिये नहीं बल्कि धर्म के लिये थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है। डॉ॰ अल्टेकर के अनुसार,"वैदिक युग से लेकर अब तक भारतवासियों के लिये शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में यह हमारा मार्ग आलोकित करती है"। प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया था। भारत 'विश्वगुरु' कहलाता था। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को प्रकाशस्रोत, अन्तर्दृष्टि, अंतर्ज्योति, ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपमाओं से विभूषित किया है। उस युग की यह मान्यता थी कि जिस प्रकार अन्धकार को दूर करने का साधन प्रकाश है, उसी प्रकार व्यक्ति के सब संशयों और भ्रमों को दूर करने का साधन शिक्षा है। प्राचीन काल में इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन का यथार्थ दर्शन कराती है। तथा इस योग्य बनाती है कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं। ऋग्वेद युग की शिक्षा का उद्देश्य था, तत्व साक्षात्कार। ब्रह्मचर्य, तप और योगाभ्यास से तत्व का साक्षात्कार करनेवाले ऋषि, विप्र, वैघस, कवि, मुनि, मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे। साक्षात्कार तत्वों का मंत्रों के आकार में संग्रह होता गया वैदिक संहिताओं में, जिनका स्वाध्याय, सांगोपांग अध्ययन, श्रवण, मनन औरनिदिध्यासन वैदिक शिक्षा रही।
विद्यालय 'गुरुकुल', 'आचार्यकुल', 'गुरुगृह' इत्यादि नामों से विदित थे। आचार्य के कुल में निवास करता हुआ, गुरुसेवा और ब्रह्मचर्य व्रतधारी विद्यार्थी षडंग वेद का अध्ययन करता था। शिक्षक को 'आचार्य' और 'गुरु' कहा जाता था और

विद्यार्थी को ब्रह्मचारी, व्रतधारी, अंतेवासी, आचार्यकुलवासी। मंत्रों के द्रष्टा अर्थात् साक्षात्कार करनेवाले ऋषि अपनी अनुभूति और उसकी व्याख्या और प्रयोग को ब्रह्मचारी, अंतेवासी को देते थे। गुरु के उपदेश पर चलते हुए वेद ग्रहण करने वाले व्रतचारी श्रुतर्षि होते थे। वेदमंत्र कंठस्थ किए जाते थे। आचार्य स्वर से मंत्रों का परायण करते और ब्रह्मचारी उनको उसी प्रकार दोहराते चले जाते थे। इसके पश्चात् अर्थबोध कराया जाता था। ब्रह्मचर्य में चले जाते थे। इसके पश्चात् अर्थबोध कराया जाता था। ब्रह्मचर्य का पालन सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य था। स्त्रियों के लिए भी आवश्यक समझा जाता था। आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले विद्यार्थी को नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते थे। ऐसी विद्यार्थिनी ब्रह्मवादिनी कही जाती थी।

यज्ञों का अनुष्ठान विधि से हो, इसलिए उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा को आवश्यक शिक्षा दी जाती थी। वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और निरुक्त उनके पाठ्य होते थे। पाँच वर्ष के बालक की प्राथमिक शिक्षा आरम्भ कर दी जाती थी। गुरुगृह में रहकर गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता उपनयन संस्कार से प्राप्त होती थी। 8 वें वर्ष में ब्राह्मण बालक के, 11 वें वर्ष में क्षत्रिय के और 12 वें वर्ष में वैश्य के उपनयन की विधि थी। अधिक से अधिक यह 16, 22 और 24 वर्षों की अवस्था में होता था। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्यार्थी गुरुगृह में 12 वर्ष वेदाध्ययन करते थे। तब वे स्नातक कहलाते थे। समापवर्तन के अवसर पर गुरुदक्षिणा देन की प्रथा थी। समावर्तन के पश्चात् भी स्नातक स्वाध्याय करते रहते थे। नैष्ठिक ब्रह्मचारी आजीवन अध्ययन करते थे। समावर्तन के सम ब्रह्मचारी दण्ड, कमण्डलु, मेखला, आदि को त्याग देते थे। ब्रह्मचर्य व्रत में जिन जिन वस्तुओं का निषेध था अब से उनका उपयोग हो सकता था। प्राचीन भारत में किसी प्रकार की परीक्षा नहीं होती थी और न ही कोई उपाधि दी जाती थी। नित्य पाठ पढ़ाने के पूर्व ब्रह्मचारी ने पढ़ाए हुए पृष्ठ को समझा है और उसका अभ्यास नियम से किया है या नहीं, इसका पता आचार्य लगा लेते थे। ब्रह्मचारी अध्ययन और अनुसन्धान में सदा लगे रहते थे तथा बाद विवाद और शास्त्रार्थ में सम्मिलित होकर अपनी योग्यता का प्रमाण देते थे।

1.1.2.2 मध्यकाल में शिक्षा

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही, इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिन्दू, अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गयी, साथ ही मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारम्भिक शिक्षा के केन्द्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों का कण्ठस्थ करते थे। वे पढ़ना, लिखना, गणित, अर्जीनवीसी और चिट्ठीपत्री भी सीखते थे। इनमें हिन्दू बालक भी पढ़ते थे।

मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ धार्मिक प्रधानता की शिक्षा दी जाती थी। साथ-साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी। सरकार शिक्षकों को नियुक्त करती थी। कहीं-कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। छात्रावास का प्रबन्ध किसी किसी मदरसे में होता था। दरिद्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती थी। अनाथालयों का संचालन होता था। शिक्षा नि:शुल्क थी। हस्तलिखित पुस्तकें पढ़ी और पढ़ाई जाती थीं। राजकुमारों के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबन्ध था। राज्यव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि का ज्ञान गृह शिक्षक से प्राप्त होता था। राजकुमारियाँ भी शिक्षा पाती थी। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। वे विद्वान् और सच्चरित्र होते थे। छात्र और शिक्षकों को आपसी सम्बन्ध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्या प्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परम्परा थी। प्रश्नोत्तर, व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे। कोई परीक्षा नहीं थी। अध्ययन अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्वत्ता के विषय में तथ्य प्राप्त करते थे। दण्ड प्रयोग किया जाता था। जीविका उपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र थे। मुसलमान शासकों के संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन ग्रंथों की रचना और उनका पठन-पाठन बराबर होता रहा।

1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारम्भ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बन्द रहता था। अनेक शिक्षक छात्रों की पढ़ाई अनेक श्रेणियों में कराते थे। अध्यापन का समय नियत था। साल भर में छोटी-बड़ी अनेक छुट्टियाँ हुआ करती थीं।

150 वर्षों के बीतते-बीतते व्यापारी ईस्ट इंडिया कम्पनी राज्य करने लगी। विस्तार में बाधा पड़ने के डर से कम्पनी शिक्षा के विषय में उदासीन रही। फिर भी विशेष कारण और उद्देश्य से 1780 में कलकत्ता में 'कलकत्ता मदरसा' और 1791 में बनारस में 'संस्कृत कालेज' कम्पनी द्वारा स्थापित किए गए। धर्मप्रचार के विषय में भी कम्पनी की पूर्वनीति बदलने लगी। कम्पनी अब अपने राज्य के भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी। 1813 के आज्ञापत्र के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया। किस प्रकार की शिक्षा दी जाए, इसपर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। वाद विवाद चलता चला। अन्त में लार्ड मैकाले के तर्क वितर्क और राजा राममोहन राय के समर्थन से प्रभावित हो 1835 ई. में लार्ड बेंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य और यूरोपीय इतिहास,

विज्ञान, इत्यादि की पढ़ाई हो और इसी में 1813 के आज्ञापत्र में अनुमोदित धन का व्यय हो। प्राच्य शिक्षा चलती चले, परन्तु अंग्रेजी और पश्चिमी विषयों के अध्ययन और अध्यापन पर जोर दिया जाए।

1.1.2.3.1 उद्देश्य

देश के विकास के लिए मानवीय संसाधनों को विकसित करना आवश्यक होता है मानवीय संसाधनों के विकास का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्भव किया जाता है| मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है यह एक शक्तिशाली माध्यम है|

आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली के प्रमुख उद्देशय निम्नवत है-

- प्राचीन मर्यादाओं का सम्मान करते हुए नयी मान्यताओं एवं विचारधाराओं के अग्रदूतों को तैयार करना|
- लोकतान्त्रिक आदर्शों की सुरक्षा करना तथा व्यक्ति एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करना|
- सामाजिक कुरीतियों की मुक्ति में सहायता प्रदान करना|
- सत्य के परिप्रेक्ष्य में नविन ज्ञान की खोज करना, पुराने ज्ञान और पुराने विश्वासों की नयी आवश्यकताओं और खोजो के प्रकार में व्याख्या करना|
- व्यक्तियों में जन्मजात गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण के माध्यम से उनका विकास करना|
- राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप जनशक्ति तथा जाति की सामाजिक आकाँक्षाओं की पूर्ति के लिए आधुनिक शिक्षा पप्रणाली का प्रसार करना|
- भारत में एसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीतिक, प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्य आदि के क्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिनाधित्व कर सकें|

1.1.2.3.2 स्वरूप

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिकनियन्त्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदण्ड होती है| भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है सन 1835 ई. में लागू किया गया था| जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिद्रश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है की हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि उद्देश्य चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें|

1835 में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नीव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था की अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोहों

को तैयार करना हैं| इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 में भारत की साक्षरता 10% के आंकडे को भी पार नही कर पाई| सतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13% ही थी|
इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई| लगभग पिछले 200 वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है की यह शिक्षा नगर और उच्च वर्ग केन्द्रीय, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी|

1.1.3 प्राथमिक विद्यालय का स्वरूप

1.1.3.1 परिषदीय विद्यालय

सरकारी स्कूलों को देश की सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। यह राष्ट्रीय स्तर या राज्य स्तर पर हो सकता है सरकारी स्कूलों में कम शुल्क संरचना होती है क्योंकि उन्हें राज्य और संघीय सरकारों द्वारा अनुदान और वित्त पोषित किया जाता है।

1.1.3.2 निजी विद्यालय

निजी स्कूल एक निजी संगठन या एनजीओ द्वारा वित्त पोषित एक स्कूल है पहली नज़र में, यह सभी के लिए स्पष्ट है कि निजी स्कूलों में अधिक सुविधाएं, बेहतर उपकरण और भवन हैं, लेकिन सरकार के स्कूलों की तुलना में भारी अध्ययन लोड है।

1.1.3.3 मिशनरी विद्यालय

मिशनरी विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी लेकिन अब इनमे काफी सुधार आया है, इन विद्यालयों में पहली वरीयता अंग्रेजी भाषा को दी जाती है|

1.1.3.4 मदरसा

मदरसा किसी भी प्रकार के शैक्षिक संस्थान के लिए अरबी शब्द है, चाहे धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक (किसी भी धर्म का), और स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय शब्द अलग तरह से प्रयोग होता है। शब्द मदरसा अलग-अलग तरीके से लिप्यंतरित है, मदरसा, मेडरेसा, मदरसा, मदरज़ा, मेडरेस आदि। पश्चिम में, शब्द आमतौर पर एक विशेष प्रकार के धार्मिक स्कूल को संदर्भित करता है, हालांकि इस अध्ययन का एकमात्र विषय नहीं हो सकता है। भारत जैसे देशों में, मदरसा के सभी छात्र मुसलमान नहीं हैं; एक आधुनिक पाठ्यक्रम भी है।

1.1.3.5 संस्कृत विद्यालय

संस्कृत विद्यालय वे विद्यालय होते जिसमे मूल रूप संस्कृत की शिक्षा दी जाती|

1.1.4 उत्तर प्रदेश में परिषदीय विद्यालयों की स्थिति

21वीं शताब्दी की वैश्विक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नति कर सकती है, जो रचनात्मकता एवं काल्पनिकता, विवेचनात्मक सोच और समस्या के समाधान से संबंधित कौशल पर आधारित हो। अनुभवमूलक विश्लेषण शिक्षा और आर्थिक उन्नति के मध्य सुदृढ़ सकारात्मक सम्बन्ध होते हैं। भारत में स्कूल जाने वालों की आयु 6-18 वर्ष के मध्य की 30.5 करोड़ की (2011 की जनगणना के अनुसार) की विशाल जनसंख्या है, जो कुल जनसंख्या का 25% से अधिक है। यदि बच्चों को वास्तविक दुनिया का आत्मविश्वास से सामना करने की शिक्षा दी जाए तो भारत में इस जनसांख्यिकीय हिस्से की संपूर्ण सामर्थ्य का अपने लिये उपयोग करने की क्षमता है।

1.1.4.1 शिक्षकों की स्थिति

जहां बच्चे विद्यालयी शिक्षा का केंद्र होते हैं, बच्चों में ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक अध्यापक की होती है। सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत के साथ ही आरम्भिक कक्षाओं में अध्यापकों के 19.48 लाख पदों का सृजन किया गया है, इन पदों के लिये अध्यापकों की नियुक्ति से छात्र-शिक्षक अनुपात में 42:1 से 24:1 का सुधार हुआ है। यद्पि अब भी ऐसे विद्यालय है, जिनमें अध्यापक केवल एक हो या उनकी संख्या अपर्याप्त हो। इसके लिये राज्य सरकारों को अध्यापकों के एक समान वितरण के लिये नियोजन करने की आवश्यकता है, एवं सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापकों के स्थान पर दक्ष अध्यापकों की नियुक्ति के लिये एक वार्षिक कार्यक्रम रखा जाना चाहिये। वर्तमान में सरकारी विद्यालयों में नियमित अध्यापकों में से 85% व्यावसायिक रूप से योग्यता संपन्न हैं। 20 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में सभी अध्यापकों के पास अपेक्षित योग्यता है। सरकार आगामी 2-3 वर्षो तक शेष 16 राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों के सभी अध्यापकों का पूर्णतया दक्ष होना सुनिश्चित करने के लिये तमाम कदम उठा रही है। मंत्रालय द्वारा वर्ष 2013 में करवाए गए एक अध्ययन के परिणामों के अनुसार, अध्यापकों की औसत उपस्थिति लगभग 83% थी। इसको बढ़ोतरी कर 100% तक लाने की आवश्यकता है।

1.1.4.2 छात्र नामांकन

ग्रामीण परिवेश के लोगों को शिक्षा देना और उन्हें शिक्षा लेने के तैयार करना शाब्दिक रूप से जितना सरल प्रतीत होता है, व्यवहारिक रूप से उतना ही दुष्कर कार्य है। आंकड़े बताते हैं कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों का नामांकन लगातार घट रहा है, और बेसिक शिक्षा विभाग लाख कोशिश के बावजूद नामांकन बढ़ाने में असफल रहा है। अगर कुल

नामांकन पर गौर करें तो आप पाएंगे कि छात्र संख्या सरकारी विद्यालय से निजी विद्यालय की तरफ शिफ्ट हो रही है, और यह भारत के समृद्ध होने का प्रतीक है।

1.1.4.3 पाठ्यक्रम

शिक्षण में एक मुख्य पाठ्यक्रम, एक पाठ्यक्रम अथवा अध्ययन का कोर्स होता है, जिसकी भूमिका को केंद्रीय माना जाता है, तथा जिसे आमतौर पर एक स्कूल या स्कूल पद्धति के सभी छात्रों के लिए अनिवार्य रूप से लागू किया जाता है। हालांकि, हमेशा ही ऐसा नहीं होता है। उदाहरण के लिए, कोई स्कूल संगीत संबंधी कक्षा को अनिवार्य कर सकता है, लेकिन यदि छात्र यदि आर्केस्ट्रा, बैंड, कोरस इत्यादि जैसी, किसी प्रदर्शन संबंधी संगीत में भाग लेते हैं, तो वे इससे बाहर रहने का चुनाव कर सकते हैं। प्रमुख (कोर) पाठ्यक्रम को अक्सर प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर स्कूली बोर्ड, शिक्षा विभाग या शिक्षा का कार्य देखने वाली अन्य प्रशासनिक संस्थाओं द्वारा स्थापित कर दिया जाता है।

1.1.4.4 विद्यालय भवन

बेसिक शिक्षा परिषद के जिले में स्थित 269 विद्यालय भवन खस्ताहाल स्थिति में हैं। कहीं बरसात में छत से पानी टपकता है तो कई भवन अत्यंत जर्जर स्थिति में पहुंच चुके हैं। इस बात का खुलासा विभागीय मुख्यालय के निर्देश पर हुई जाँच में हुआ है|

1.1.5 परिषदीय विद्यालयों की समस्याएं

विद्यालय में अध्ययनरत छात्र और छात्राएं अव्यवस्थाओं के बीच पठन-पाठन का कार्य करने को मजबूर हैं। पूरे विद्यालय प्रांगण में साफ-सफाई न होने के कारण जगह-जगह कूड़े करकट का अंबार लगा हुआ है। विद्यालय परिसर में बालक और बालिकाओं के लिए निर्मित शौचालय भवन में हमेशा ताला लटकता रहता है, जिससे बच्चों को मजबूर होकर खुले में शौच जाना पड़ता है। विद्यालय प्रांगण में ही मौजूद पूर्व माध्यमिक विद्यालय बस्ती का नवनिर्मित शौचालय देखरेख के अभाव में पूर्णतया क्षतिग्रस्त होकर निष्क्रिय बना हुआ है। जिसका उपयोग बच्चों के शौच क्रिया करने के बजाय विद्यालय परिसर से निकले हुए कूड़ा करकट को रखने के उपयोग में किया जा रहा है। शौचालय के दरवाजे टूटे हुए हैं, अंदर काफी मात्रा में कूड़ा भरा हुआ है। यहाँ भी बच्चों को शौच के लिए बाहर खुले में जाना पड़ता है। स्वच्छ भारत मिशन अभियान के तहत सभी परिषदीय विद्यालयों में लाखों रुपए की लागत से शौचालय का निर्माण कराया गया था, कि बच्चों को खुले में शौच न जाना पड़े लेकिन विद्यालय प्रशासन व सम्बन्धित सफाई कर्मी की उदासीनता एवं लापरवाही के चलते स्वच्छता अभियान की धज्जियां उड़ाने के साथ ही कहीं न कहीं भवनों के दुर्दशा से सरकारी राजस्व को भी क्षति पहुंचाई जा रही है। बच्चों के खुले शौच जाने से जहां एक तरफ वातावरण दूषित हो रहा

है,वहीं दूसरी तरफ बच्चों में संक्रामक बीमारियों के होने का खतरा भी उत्पन्न हो रहा है। कायाकल्प योजना के तहत विद्यालय भवन की रंगाई पुताई व वॉल पेंटिंग का कार्य अभी तक नहीं कराया गया है और न ही भवन की फर्श पर टाइल्स लगवाई गई है।

1.1.6 चित्रकूट जनपद में परिषदीय विद्यालय की स्थिति

बेसिक शिक्षा में सुधार को लेकर चिंतित मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक ने दो टूक शब्दों में कहा कि यदि स्कूल में बच्चे नहीं आएंगे तो शिक्षकों का भी मतलब नहीं है। शिक्षक यदि जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे तो विद्यालय में पढ़ने के लिए स्वत: बच्चे नाम लिखाने पहुंचेंगे। सदर ब्लाक व मानिकपुर ब्लाक क्षेत्र के तमाम विद्यालयों में उपस्थिति सामान्य से भी कम होने पर उन्होंने कड़ी नाराजगी जताई।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

हम सभी जानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है| इस शिक्षा प्रणाली में देश के को अन्धकार में ले जाकर नाश के कगार पर खड़ा कर दिया है| शिक्षा के स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है| ऐसे में भारत के हित एवं उत्कर्ष के लिए सबसे जरूरी है कि देशभर के परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाया जाए| क्या हम सब शिक्षा प्रणाली में रुचि लेते हैं इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु मेरे द्वारा यह शोध प्रबन्ध विषय वस्तु लेने की इच्छा जागृत हुई और फलस्वरुप में इस शोध कार्य के प्रगति हेतु अग्रसर हुआ|

1.3 समस्या कथन

‘चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन’

1.4 अध्ययन का औचित्य

शिक्षा जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण है| उचित शिक्षा में मूल्यवान समाज का निर्माण सम्भव है| शिक्षा से ही हम ज्ञानात्मक परम्परा को आगे बढ़ाते है| शिक्षक एवं शिक्षा की प्रक्रिया को इस बात के प्रति सावधानी बरतनी होगी कि शिक्षा के नाम पर हमें पूर्वाग्रहों और अवधारणाओं को बालक के मन में रोककर उनकी स्वतन्त्रता की को सीमित ना करें| शिक्षा का उद्देश्य है सही रिश्तों की स्थापना शिक्षक, विद्यार्थी और समाज के प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को पहचाने, स्वयं की पहचान के साथ जीवन की समग्रता को समझे| किसी भी राष्ट्र या समाज को ऊपर उठाने का श्रेय शिक्षा को जाता है| इसी में परिषदीय विद्यालय की शिक्षा में सुधार किया जा सकता है|

लघु शोध कार्य चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों पर आधारित है, जिसमें विद्यालय की विशिष्टताओं का वर्णन किया गया है, जो वर्तमान शिक्षा की पद्धति में सुधार कर समृद्ध भारत को पुनर्जागरण का शंखनाद करते हैं|

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.5.1 चित्रकूट

चित्रकूट भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है। चित्रकूट धाम इसका मुख्यालय है। क्षेत्रफल- 3,164 वर्ग कि॰मी॰, जनसंख्या- 9,91,697(2011जनगणना), साक्षरता-65.05%, एस॰टी॰डी॰कोड- 05198

उत्तर प्रदेश में 6 मई 1997 को बाँदा जनपद से काट कर छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से नए जिले का सृजन किया गया जिसमे कर्वी तथा मऊ तहसीलें शामिल थीं। कुछ समय बाद, 4 सितंबर 1998 को जिले का नाम बदल कर चित्रकूट कर दिया गया। यह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में फैली उत्तरी विंध्य श्रृंखला में स्थित है। यहाँ का बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट और मध्य प्रदेश के सतना जनपद में शामिल है। यहाँ प्रयुक्त "चित्रकूट" शब्द, इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों और स्थलों की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक विरासत का प्रतीक है। प्रत्येक अमावस्या में यहाँ विभिन्न क्षेत्रों से लाखों श्रृद्धालु एकत्र होते हैं। सोमवती अमावस्या, दीपावली, शरद-पूर्णिमा, मकर-संक्रांति और राम नवमी यहाँ ऐसे समारोहों के विशेष अवसर हैं। एक शांत और सुंदर आध्यात्मिक स्थान है, यह आपको कण कण में श्री राम मय कि अनुभूति होगी|

1.5.2 अनुकरणीय

यहाँ 'अ नुकरण' शब्द यूनानी (ग्रीक) भाषा के 'मिमेसिस' (Mimesis) के पर्याय रूप में प्रयुक्त हुआ है। 'मिमेसिस' का अंग्रेजी अनुवाद है - 'इमिटेशन' (imitation) किन्तु 'इमिटेशन' से 'मिमेसिस' का पूरा अर्थ व्यक्त नहीं होता, क्योंकि यूनानी भाषा के बहुत सारे शब्दों की अर्थवत्ता या अर्थछटा अंग्रेजी में यथावत् व्यक्त नहीं हो पाती।

हिन्दी में 'अनुकरण' अंग्रेजी के 'इमिटेशन' शब्द से रूपान्तर होकर आया है। अनुकरण का सामान्य अर्थ है- नकल या प्रतिलिपि या प्रतिछाया, जबकि वर्तमान सन्दर्भ में उसका मान्य अर्थ है- ''अभ्यास के लिए लेखकों और कवियों को उपलब्ध उत्कृष्ट रचनाओं का अध्ययन एवं अनुसरण करना।'' यूनानी भाषा में कला के प्रसंग में अनुकरण का व्यवहार अरस्तू का मौलिक प्रयोग नहीं है। अरस्तू से पूर्व प्लेटो ने अनुकरण का प्रतिपादन कविता को हेय तथा हानिकारक सिद्ध करने के हेतु किया था।

1.5.3 परिषदीय विद्यालय

सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों को सरकारी विद्यालय कहा जाता है। इसे हम कई चरण में देख सकते हैं सरकार क्लास 1 से लेकर और डिप्लोमा डिग्री आदि के लिए देश भर में सरकारी विद्यालय की योजन बना राखी है सबसे पहले क्लास 1 से 5 तक स्कूल बनाये गए जिसमें गरीब बच्चों को फ्री शिक्षा दी जाती हैं इसके बाद क्लास 6 से लेकर 8 क्लास तक स्कूल की व्यवस्था की है| हाई स्कूल व इण्टर की क्लास के स्कूल में कुछ सरकारी स्कूल होते हैं कुछ प्राइवेट स्कूल होते हैं इनके अलाव सरकार जो प्राइवेट स्कूल होते हैं उनमें सरकारी अध्यापक रखकर उन स्कूल को अर्ध सरकारी स्कूल के रूप में भी चलती है|

1.5.4 अध्ययन

अध्ययन एक कला हैं जिसमें एक मनुष्य कुछ करने, सिखाने आदि बातों को सीखता हैं|

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

जीवन के सभी कार्य सोद्देश्य होते है क्यूंकि उद्देश्य के आभाव में जीवन दिशाहीन हो जाता है| किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किए गए उद्देश्यों की स्पष्टता अध्ययन को सरल व सफल बना देती है| इसलिए प्रस्तुति अध्ययन में शोधकर्ता ने कुछ उद्देश्य निर्धारित किए है ताकि शोधकर्ता को सही दिशा मिल सके| प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न है-

- परिषदीय विद्यालय का निम्न सन्दर्भ में अध्ययन
- परिचयात्मक विवरण
- विशेषताएँ
- उपलब्धियाँ

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन

- ✓ प्रस्तुत अध्ययन में परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा गुणवत्ता व विद्यालय परिवेष को सम्मिलित किया गया है|
- ✓ प्रस्तुत शोध में केवल चित्रकूट जनपद के परिषदीय विद्यालय को सम्मिलित किया गया है|

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ शिक्स्जा जिनादगो जीने का नही अपितु रोने का पाठ पढ़ातीहै इससे बचने के परिषदीय विध्यालय के उअदय की आवश्यकता पड़ी है| ध्वस्त हुई शिक्षा प्रणाली को पुन: जीवित किये बिना भारतीय शिक्षा में सुधार असम्भव है तभी परिषदीय की स्थिति को सुधार कर शिक्षा की गुणवत्ता को बचा पायेंगे|

उपरोक्त कथन के आलोक में परिषदीय विद्यालय शिक्षा में आप अपने आप को कितना समाहित करते है, कितना महत्व देते हैं तथा इनसे सम्बन्धित सामने क्या समस्याएँ आती है, इसके क्या लाभ है आदि को ज्ञात करना ही अध्ययन का मूल्य ध्येय है|

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- ❖ प्रस्तावना
- ❖ अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य
- ❖ अध्ययन से सम्बन्धित समाचार एवं लेख इत्यादि
- ❖ समीक्षात्मक निष्कर्ष
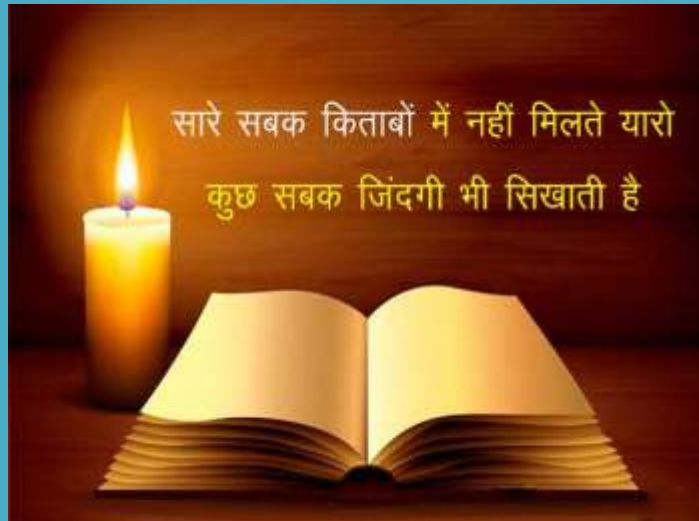
द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

यह तो सर्वविदित है कि शोध एक चरणबद्ध प्रक्रिया है, एवं यह भी सत्य है कि उपलब्ध ज्ञान में अत्यंत तीव्र गति से वृद्धि हो रही है अत: यदि उसके लिए स्वयं को उपलब्ध ज्ञान के सम्बन्ध में अद्यतन बनाए रखना आवश्यक हो जाता है|

साहित्य अध्ययन प्रत्येक अनुसंधान प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है, वस्तुतः साहित्य का अध्ययन एक कठोर परिश्रम का कार्य है, प्रत्येक अनुसंधानकर्ता का अनुसंधान में साहित्य का अध्ययन एक अनिवार्य और प्रारम्भिक कदम है, मानविकी विषयों में तो साहित्य पुनरावलोकन के बिना अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता है, अतीत अनुभवों का लाभ उठाते हुए अपनी यात्रा की सीढ़ियों की ओर अग्रसर होता है, मानव संचित ज्ञान के आधार पर पुराने अनुभवों एवं आदर्शों के सहारे बहुत-सी असफलताओं और निराशा से मुक्त रहता है, मानव का समस्त संचित गया विवेकपूर्ण क्रमबद्ध ढंग से हो सके प्रत्येक नई पीढ़ी को धरोहर के रूप में प्राप्त होता है, एवं उसी के आधार पर अपने स्तर से आगे बढ़ते है, जब तक हमें इस बात का ज्ञान नहीं होगा, कि जिस क्षेत्र को हमने शोध कार्य के लिए चुना है, और क्षेत्र में कितना अध्ययन शोध कार्य हो चुका है, किन साधनों की मदद से किस कार्य को किया गया है, और उसके क्या परिणाम निकले है, तब तक हम उस क्षेत्र में कोई नया कार्य या नया शोध करने में असमर्थ रहेंगे|
ऐतिहासिक अन्वेषण में समस्या से उपलब्ध संपूर्ण सामग्री चार्ट, पत्रों, लेख आदि के रूप में मीमांसा करना हो अनिसंधान का मुख्य कार्य क्षेत्रीय अध्ययनों में जहाँ उअप्लब्ध उपकरणों तथा नविन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा स्व संकलन का कार्य होता है, वह समस्या से सम्बन्धित समस्त साहित्य का अध्ययन अनुसंधान का प्रत्मिक आधार तथा अनिसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है|

2.2 शोध अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य

सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन हेतु विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, लघुशोध,शोध प्रबन्ध, शैक्षिक सर्वेक्षण का अध्ययन किया गया है प्रस्तुत अनुसंधान का विवरण निम्न प्रकार से है-

(1) नरेन्द्र कुमार सिंह (2000) ने अनुसूचित जाति के संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति: एक अध्ययन पर शोध कार्य किया| बालिका शिक्षा के प्रति अधिकांश माता-पिता का दृष्टिकोण सकारात्मक होते हुए भी अनेक समस्याएं हैं| उनमें कुछ प्रत्यक्ष रुप में हैं, जैसे- किताब, ड्रेस इत्यादि! और कुछ अप्रत्यक्ष रूप में लड़की 10 साल

के लगभग हो जाती है, तो वह घर पर बच्चों के खिलने के अलावा उनकी गरीबीपन को दूर करने में माता-पिता के साथ बड़े लोगों के यहाँ काम पर जाती है| शिक्षा नि:शुल्क होने का बाद भी बालिकायें घर में रोजो-रोटी की आवश्यकतायें पूर्ति करने में सहयोग के कारण जिस अनुपात में अनुसूचित जाति की बालिकाओं की प्रगति होनी चाहिये, नहीं हो सकी|

(2) प्रभा भट्ट (2016) ने माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विध्यार्थियों की समस्या समाधान की योग्यता पर बुद्धि,आत्मसंकल्पना, समयोजन तथा तार्किक योग्यता का प्रभाव पर शोध कार किया| माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालय के प्रकार को कोई सार्थक प्रभाव नहीं है, जबकि बुद्धी, आत्मसंकल्पना, समायोजन, तार्किक योग्यता को सह चर के रूप में लिया गया है|

(3) रोशनी (2017) ने अध्यापक शिक्षा के नवाचार एवं उनकी चुनौतियों का राजस्थान के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया| राजस्थान में अध्यापक शिक्स्षा एक उत्पादीय संस्थान सा अस्तित्व उसके हितधारी वर्गों की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं से युक्त है| वर्तमान के उत्पाद के केन्द्र में उसका हितधारी होत्या है| ऐसे में शिक्षक की आवश्यकता, निर्णय एवं अपने समग्र परिवेश में उनकों संचानल को हितधारी वर्गों की मांगों के अनुरूप रखना आज के युग की सबसे बड़ी आर्थिक व सामाजिक चुनौती है|

(4) बरनवाल जयशंकर (2006) ने ग्रामीण विकास में नवाचार की भूमिका: "तहसील मेहंनगर आजमगढ़, का भौगोलिक विश्लेषण पर शोध कार्य किया है| वर्तमान में क्षेत्र में संचालित विकास योजनाओं के साथ उसमें विद्यमान कमियों को रेखांकित करते हुए भावी योजनाओं के समन्वयन पर विशेष बल देने की आवश्यकता है कृषि, लघु ईवा कुटीर उद्योग तथा परिवहन व संचार के विकास हेतु विवेकपूर्ण नियोजन में इन, अवययों के विभिन्न पक्षों पर साथ-साथ विचार करते हुए, क्षेत्र के संतुलित विकास को ध्यान में रखकर भावी स्वरूप को निश्चित करने का प्रयास किया गया है|

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार एवं लेख इत्यादि

गाँव कनेक्सन नामक पत्रिका में 30नवम्बर 2018 को चित्रकूट के इस विद्यालय में प्रधानाचार्य की कोशिशों से आया बदलाव, खुबसूरत परिसर के लिए पुरे जनपद में अलग पहचान नामक शीर्षक से प्रकाशित किया गया है|

चित्रकूट के इस स्कूल में प्रधानाध्यापक की कोशिशों से आया बदलाव, खूबसूरत परिसर के लिए पूरे जनपद में है अलग पहचान

चित्र संख्या 2.1 गाँव कनेक्सन

बाँदा, संस्करण, दैनिक जागरण 21 अगस्त 2018, एक स्कूल जहाँ रविवार को भी होती है पढाई शीर्षक से प्रकाशित किया गया|

चित्र संख्या 2.2 दैनिक जागरण

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सैद्धांतिक व अनुभाविक आधार का, जिससे समस्या उत्पन्न हुई संक्षिप्त विवरण होना चाहिए| इस कार्य के लिए दोनों वैचारिक व अनुसंधान साहित्य की समीक्षा होनी चाहिए| समस्या के सम्बन्धित नए से नए अनुसंधान की प्रवृत्ति का भी इसमें लेखा होना चाहिए| अनुसंधानकर्ता को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि विद्यमान साहित्य में उसकी समस्या जड़ें हैं, बस उन पर और अनुसंधान करने व पता लगाने की आवश्यकता है| पूर्व में किए गए अनुसंधान के विश्लेषण से पहले ही, किए जा चुके कार्य को दोहराने का जोखिम नहीं रहता और इससे परिकल्पना के संरूपण का आधार मिलता है| मेरा यह शोध "चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन" एक अनुकरणीय शोध है, इसके पूर्व इस विषय पर शोध कार्य नहीं किया गया है|

तृतीय अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

- प्रस्तावना
- शोध विधि
- अध्ययन समष्टि
- प्रतिदर्श चयन की विधियाँ
- शोध उपकरण

तृतीय अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान, आकल्पन अनुसंधान की एक ऐसी संरचना या योजना है, जिसे अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्राप्ति के लिए प्रस्तुत किया जाता है| यह आकल्पन अध्ययन के संचालन हेतु प्रयुक्त विधियों का विवरण प्रस्तुत करता है, जिसके अन्तर्गत कब, कहाँ किन दशाओं में प्रदत्त प्राप्त किया जायेगा इसका उल्लेख होता है| दुसरे शब्दों में अनुसंधान आकल्पन इंगित करता है, कि किन विषयों पर किस प्रकार अनुसंधान सम्पन्न किया जाता है, तथा प्रद्त संकलन के लिये किन विधियों का प्रयोग किया जाता है| किसी भी कार्य को पूरा कर लेने के लिये उसकी पूर्व योजना बना लेना उचित होता है, जिससे न केवल कार्य में लगने वाला श्रम, धन, समय में मितव्ययता आती है, वरन कार्यों में भी वृद्धि होती है| अनुसंधान अकल्पना के अभाव में शोध कार्य अभियोजित, विचारहीन तथा उस भटके राही की भाँती है, जो अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के साधन तथा मार्गों से अनभिज्ञ होता है| वैज्ञानिक शोध की प्रक्रिया के तीसरे सोपान में शोध प्रारूप तैयार किया जाता है| शोध की रूपरेखा, नियोजन को शोध प्रारूप कहते हैं, जो न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है|

3.2 शोध विधि

प्रस्तुत समस्यात्मक शोध में वर्णनात्मक विधि के अन्तर्गत केस अध्ययन का भी प्रयोग किया जाता है, क्योंकि इतिहास किसी भी क्षेत्र में अतीत की घटनाओं का एकीकृत वर्णन है|

वर्तमान की समस्याओं को हल करने के लिए, अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना ऐतिहासिक अनुसंधान की उपयोगिता का तर्क संगती प्रदान करता है| अतीत केवल अतीत ही नहीं वर्त्तमान को समझने की कुंजी है|

वर्णनात्मक अनुसंधान विधि

शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान के क्षेत्र मने वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्व है और यह बड़े व्यापक रूप में व्यवहार में आता है|

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट. के अनुसार, ''वर्णनात्मक अनुसंधान 'क्या है', का वर्णन एवं विश्लेषण करता है| परिस्थितियों अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जोपाई जा रही हैं,

प्रक्रियाएँ जो चल रही है, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे है अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही है, उन्हीं से इसका सम्बन्ध है|

केस अध्ययन बिधि

इस प्रकार का अवलोकन अनुसंधान किसी व्यक्ति या उनके व्होते समूह के अध्ययन पर आधारित होता है| इस मामले में, हम अध्ययन के विषयों के विभिन्न अनुभवों और व्यवहारों के बारे में गहराई से जाँच करते हैं|

3.3 अध्ययन समष्टि

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वांछित निरीक्षणों से सम्बन्धित ईकाइयों की कुल संख्या से है| वर्तमान अध्ययन के संदर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिसमें वांछित सूचनाएं संकलित करनी है वह है- चित्रकूट जनपद के परिषदीय विद्यालय में 7 विद्यालय अनुकरणीय पाये गए|

जनपद चित्रकूट में कुल 1434 परिषदीय विद्यालय हैं, जिसमें प्राथमिक विद्यालय व उच्च प्राथमिक विद्यालय शामिल है|

प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 987, जिसमें 12 विद्यालय चित्रकूट नगर क्षेत्र के हैं व 975 विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के शामिल है|

उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 447, जिसमें 7 विद्यालय चित्रकूट नगर क्षेत्र के हैं व 440 विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के शामिल है|

जिसमें कुछ विद्यालय अनुकरणीय है जिनका चयन न्यादार्ष के रूप में किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

क्रं० सं०	**अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय**
1	प्राथमिक विद्यालय गडरियन पुरवा खरौंध क्षेत्र-मानिकपुर (चित्रकूट)
2	प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)
3	पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला क्षेत्र-रामनगर (चित्रकूट)
4	पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट
5	पूर्व माध्यमिक विद्यालय खरैहा क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट
6	पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1 मानिकपुर (चित्रकूट)
7	पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)

चित्र संख्या 3.3 अनुकरणीय विद्यालय

जनपद चित्रकूट के ब्लाक

क्र. सं.	ब्लाक	विद्यालय
1	**Karwi**	03
2	Mau	00
3	Pahari	00
4	**Ramnagar**	01
5	**Manikpur**	04

चित्र संख्या 3.4 **जनपद चित्रकूट के ब्लाक**

चित्रकूट जनपद मानचित्र
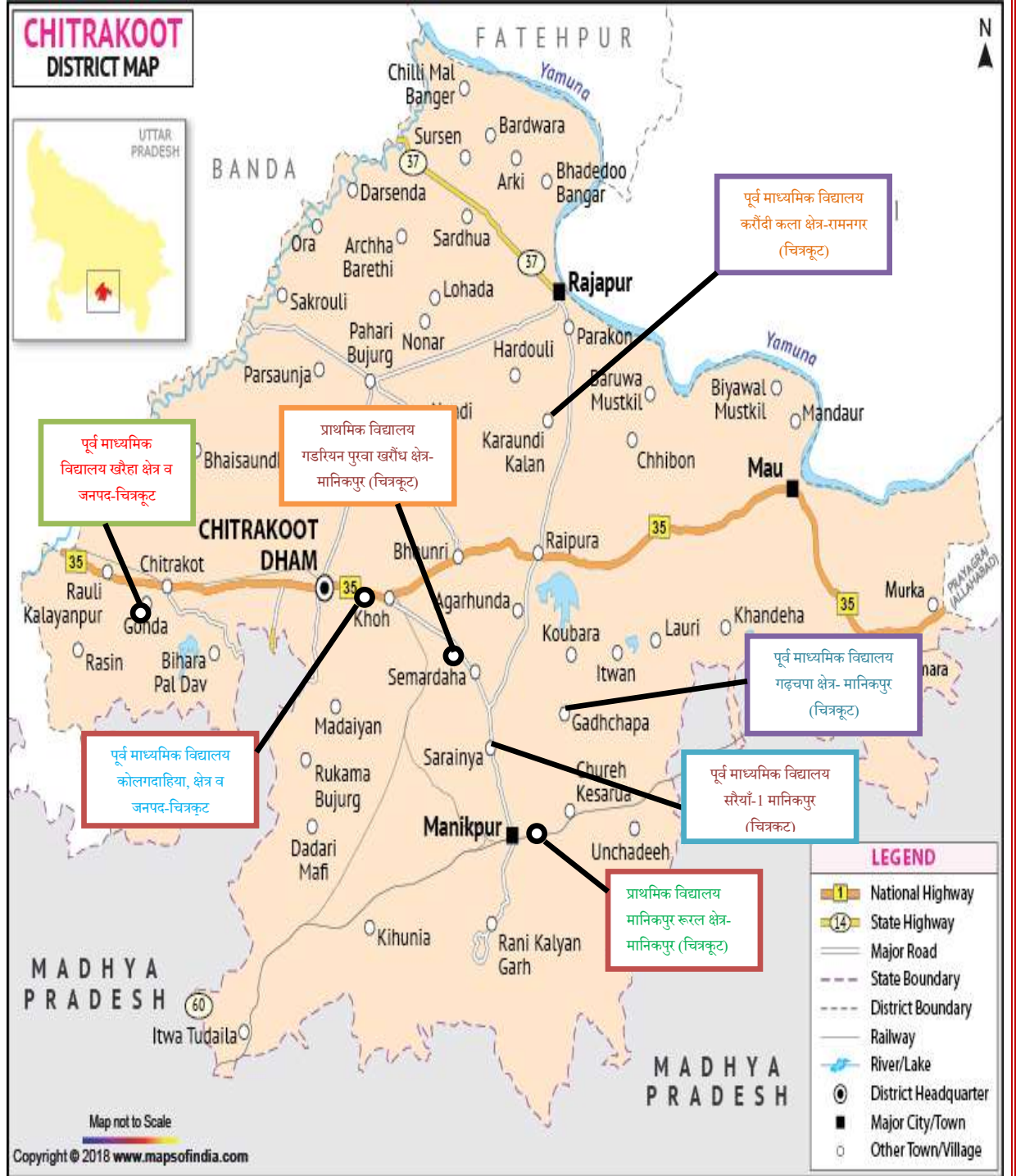
चित्र संख्या 3.5 **चित्रकूट जनपद मानचित्र**

3.4 प्रतिदर्श चयन की विधियाँ

प्रतिदर्श से तात्पर्य चयन तथा अनुमान लगाना दो सम्मिलित क्रियाओं से हैं, प्रतिदर्श ऐसा होना चाहिये जिससे जनसंख्या के बारे में अनुमानों में कम से कम त्रुटी हो| इसे सामान्य रूप दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है|

3.4.1 सम्भाव्य प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के चयन में जब किसी ऐसी विधि का प्रयोग किया जाता है जिसमें जनसंख्या के प्रतिधित्व की सम्भावना होती है उसे सम्भाव्य प्रतिदर्श की संज्ञा दि जाती है|

3.4.2 असम्भाव्य प्रतिदर्श

जब प्रतिदर्श के चयन में सम्भावना का कोई स्थान नहीं होता उसे असम्भाव्य प्रतिदर्श कहते हैं| इसमें जनसंख्या और प्रतिदर्श एक ही होते हैं|

3.5 शोध उपकरण

एक शोधकर्ता को आंकड़ों का संकलन करने के लिए उपकरणों की आवश्यकता होती है| प्रत्येक उपकरण शोध से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन करने एवं परिकल्पनाओं की जाँच करने के लिए उपयुक्त होना चाहिए, क्यूँकी उनकी उपयुक्तता, वैधता व विश्वसनीयता पर ही प्रदत्तों की विश्वसनीयताव वैधता निर्भर करती है| उपकरण वे ठोस साधन हैं, जिन्हें शोध या सर्वेक्षण कार्य में स्वहायक माना जाता है|

- प्रमापीकृत उपकरण
- अप्रमापीकृत उपकरण

3.5.1 प्रमापीकृत उपकरण

सामान्य रूप से प्रमापीकृत परिक्षण वह है जिसमें विषय-वस्तु, विधि, निष्कर्ष आदि निश्चित होते हैं तथा मानक निर्धारित किये गए होते हैं|

3.5.2 अप्रमापीकृत उपकरण

ऐसे उपकरण जिनका शोधकर्ता स्वयं निर्माण करता है तथा जिसका मानक निर्धारित नहीं होते अप्रमापीकृत उपकरण कहलाते हैं|

चतुर्थ अध्याय

चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यायल

- प्राथमिक विद्यालय गडरियन पुरवा खरौंध क्षेत्र-मानिकपुर (चित्रकूट)
- प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला क्षेत्र-रामनगर (चित्रकूट)
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय खरैहा क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1 मानिकपुर (चित्रकूट)
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)

बच्चों को स्कूल
अच्छा नहीं लगता है
परन्तु बच्चों के जीवन को
स्कूल ही अच्छा बनाता हैं.

चतुर्थ अध्याय

चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय

4.1 प्राथमिक विद्यालय गड़रियन पुरवा, खरौंध, क्षेत्र-मानिकपुर (चित्रकूट)

चित्र संख्या 4.6 प्राथमिक विद्यालय गड़रियन पुरवा, खरौंध

प्राथमिक विद्यालय गड़रियन पुरवा खरौंध की स्थापना 1961 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के जनपद चित्रकूट के मानिकपुर ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 1 से 5 तक कि कक्षायें चलती हैं। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता है| इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 3 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर/टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी का स्रोत नल का पानी है और यह कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों व लड़कियों के अलग-अलग शौचालय है जो कार्यात्मक है। स्कूल में शिक्षण और सीखने के उद्देश्यों के लिए कोई कंप्यूटर नहीं है। स्कूल परिसर में मध्यान्ह भोजन तैयार किया जाता है|

जनपद चित्रकूट में प्राथमिक विद्यालय खरौंध का स्थान अद्वितीय है| जनपद चित्रकूट में कुल 1434 परिषदीय विद्यालय में यह विद्यालय एक अनुकरणीय विद्यालय है| इस विद्यालय ने बाल क्रीड़ा व शिक्षक सम्मान पुरस्कार प्राप्त कर विशिष्ट ख्याति प्राप्त की है ||

अवस्थिति- यह उत्तर प्रदेश के जनपद चित्रकूट के मानिकपुर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।

अक्षांश- 25.153472 **देशांतर-** 80.7398436

चित्र संख्या 4.7 प्राथमिक विद्यालय गड़रियन पुरवा, खरौंध गूगल मैप
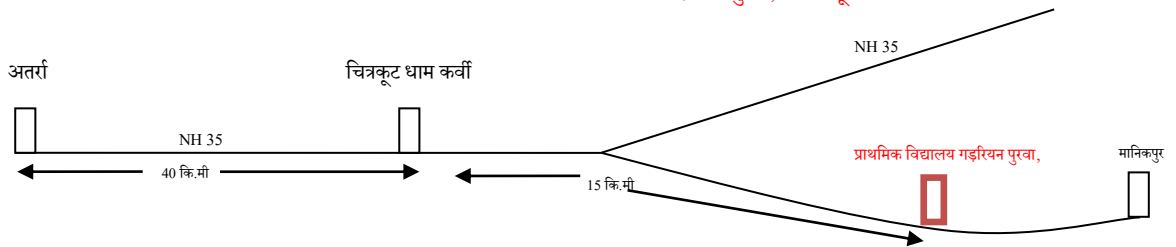
चित्र संख्या 4.8 प्राथमिक विद्यालय गड़रियन पुरवा, खरौंध अवस्थिति मानचित्र

छात्र नामांकन- छात्रों का नामांकन 2013 से पहले 43 था, जो आज बढ़ कर 205 हो गया है| 205 छात्रों में लगभग 190 छात्र प्रतिदिन उपस्थित होते हैं |

विद्यालय परिवार (2019-20)

प्रधानाचार्य- श्री कल्याण सिंह (वर्ष-2013 से अद्यतन कार्यरत)

सहायक अध्यापक- विनय कुमार सिंह, राज करन यादव

परिचारक- साधना मिश्रा

चित्र संख्या 4.9 विद्यालय परिवार

विद्यालय प्रबंध समिति- इस विद्यालय में प्रबंध समिति का भी गठन किया गया है जो इस प्रकार है-

चित्र संख्या 4.10 विद्यालय प्रबंध समिति

विद्यालय की विशिष्टतायें- विद्यालय का माहौल बहुत ही सुन्दर है| विद्यालय की सभी कक्षाओं की दीवारों पर आकर्षक लेखन का उपयोग किया गया है, जो अति मनमोहक है|

पुरस्कार

- उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा प्रधानाचार्य के उत्कृष्ट कार्य के लिए शिक्षक सम्मान समारोह 2016, तत्कालीन D.M शिवा कान्त दुबे द्वारा दिया गया|

चित्र संख्या 4.11 शिक्षक सम्मान समारोह 2016

- क्षेत्रीय मिनी बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता मानिकपुर 2019-20 के विजेता

चित्र संख्या 4.12 मिनी बाल क्रीड़ा विजेता शिल्ड

कक्षा-कक्ष में आकर्षक भित्तिय लेखन-विद्यालय की समस्त कक्षाओं में आकर्षक भित्तिय लेखन का उपयोग किया गया जैसे- फलों के नाम, सब्जियों के नाम, चिड़ियों के नाम, सोलर सिस्टम एवं प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाया गया है|

चित्र संख्या 4.13 कक्षा-1 में आकर्षक भित्तिय लेखन

चित्र संख्या 4.14 कक्षा-4 में आकर्षक भित्तिय लेखन

चित्र संख्या 4.15 प्रार्थना स्थल पर आकर्षकभित्तिय लेखन

टिफिन वितरण- प्रधानाचार्य द्वारा सभी अध्ययन रत विद्यार्थियों को अंक-पत्र के साथ भोजन के लिए एक-एक टिफिन दिया जाता है जो प्रधानाचार्य जी की तरफ से सप्रेम भेंट के रूप में दिया जाता है|

चित्र संख्या 4.16 टिफिन वितरण

4.2 प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल, क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)

चित्र संख्या 4.17 प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल

प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल की स्थापना 2006 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 1 से 5 तक की शिक्षा दी जाती है। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता है। इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 4 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर / टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी का स्रोत हैंड पम्प हैं और यह कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों व लड़कियों के अलग-अलग शौचालय है जो कार्यात्मक है। स्कूल में एक खेल का मैदान है। स्कूल में एक पुस्तकालय है और उसके

पुस्तकालय में 55 पुस्तकें हैं। स्कूल में कंप्यूटर एडेड लर्निंग लैब नहीं है। स्कूल परिसर में मध्यान्ह भोजन तैयार किया जाता है|

अवस्थिति- यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लॉक में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।

अक्षांश- 25.0620765 **देशांतर-** 81.0949834

चित्र संख्या 4.18 प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल, गूगल मैप
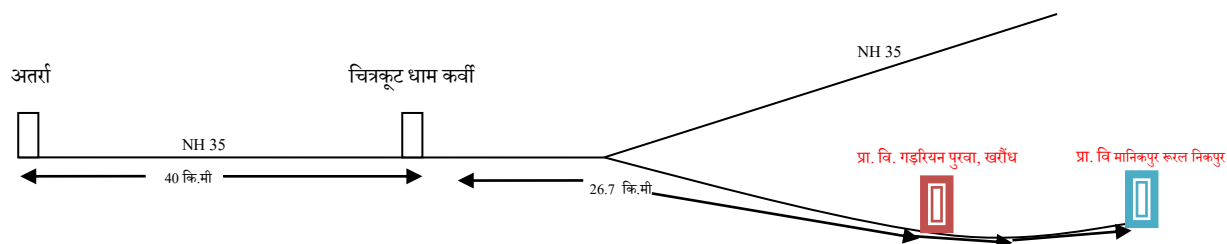
चित्र संख्या 4.19 प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल, अवस्थिति मानचित्र

विद्यालय परिवार

प्रधानाचार्य- श्री चन्द्रशेखर आजाद(2006)

सहायक अध्यापक- श्री नागेन्द्र सिंह, श्री धर्मेन्द्र प्रजापति, स्वेता पटेल

परिचारक- श्री राकेश सिंह

विद्यालय की विशिष्टताएं- यह विद्यालय कोल जनजाति के बच्चों के लिए एक वरदान के स्वरूप कार्य कर रहा है| क्यूँकी यहाँ पर अधिकतर बच्चे कोल जनजाति के शिक्षा ग्रहण करते हैं| इनसे कई बच्चे शिक्षा ग्रहण कर नवोदय विद्यालय में प्रवेश ले चुके हैं| नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी प्रधानाचार्य जी स्वयं बच्चों को नि:शुल्क करवाते हैं, अन्य बच्चों की तरह अपने बच्चे को भी विद्यालय में पढ़ते हैं| 2019 में उदय वीर का चयन नवोदय विद्यालय में हुआ यह भी कोल जनजाति का बालक है|

जो बच्चा अगर विद्यालय नहीं आता है, तो प्रधानाचार्य जी स्यमं जाकर उस बच्चे के माता-पिता से मिलकर कारण जानकार, उसके कारणों का निवारण कराकर उसे पुन: विद्यालय आने के लिए प्रेरित करते हैं| प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल में कोल जनजाति के बच्चों की आधिकता के कारण यह विद्यालय विशिष्ट ख्याति प्राप्त की है|

छात्र नामांकन- चन्द्रशेखर आजाद जी ने जब इस विद्यालय का कार्यभार संभाला तब यहाँ का नामांकन संख्या 05 थी, आज यह नामांकन संख्या बढ़ कर123 है, जिसमें लगभग 115 बच्चे प्रतिदिन उपस्थित ही पाए जाते हैं|

छात्राख्या माह- अगस्त (2020)

प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)

संकुल- उमरी

वर्ग	**सामान्य**			**अनु०जाति**			**पि० जाती**			**अल्पसंख्यक**			**योग**		
कक्षा	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
1	-	3	3	6	5	11	-	1	1	3	2	5	10	11	21
2	-	-	-	8	14	22	-	4	4	3	2	5	11	20	31
3	-	1	1	5	6	11	3	3	6	-	1	1	8	11	19
4	-	1	1	11	11	22	3	2	5	2	1	3	16	15	31
5	-	-	-	8	3	11	3	6	9	-	1	1	11	10	21
योग	-	5	5	38	39	77	9	16	25	8	7	15	56	67	123

चित्र संख्या 4.20 छात्राख्या

विद्यालय में उपस्थित शिक्षण सहायक सामाग्री- विद्यालय की दीवारों पर कई प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री को अंकित किया गया है जैसे- A to Z, क से ज्ञ, पहाड़े, गिनती, राष्ट्रीय पुष्प, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय चिन्ह आदि का अंकन किया गया है|

चित्र संख्या 4.21 शिक्षण सहायक सामाग्री

चित्र संख्या 4.22 शिक्षण सहायक सामाग्री

चित्र संख्या 4.23 शिक्षण सहायक सामाग्री

4.3 2 प्राथमिक विद्यालय खरैहा, क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट

चित्र संख्या 4.24 प्राथमिक विद्यालय खरैहा

प्राथमिक विद्यालय खरैहा की स्थापना 1918 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के कर्वी ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 1 से 5 तक की शिक्षा दी जाती हैं। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता है। इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 3 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर / टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी का स्रोत पम्प हैं और यह कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों व लड़कियों के अलग-अलग शौचालय है जो कार्यात्मक है। स्कूल में एक खेल का मैदान नहीं है।

अवस्थिति- यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के कर्वी ब्लॉक में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।

अक्षांश- 25.1889952 **देशांतर-** 80.7437198
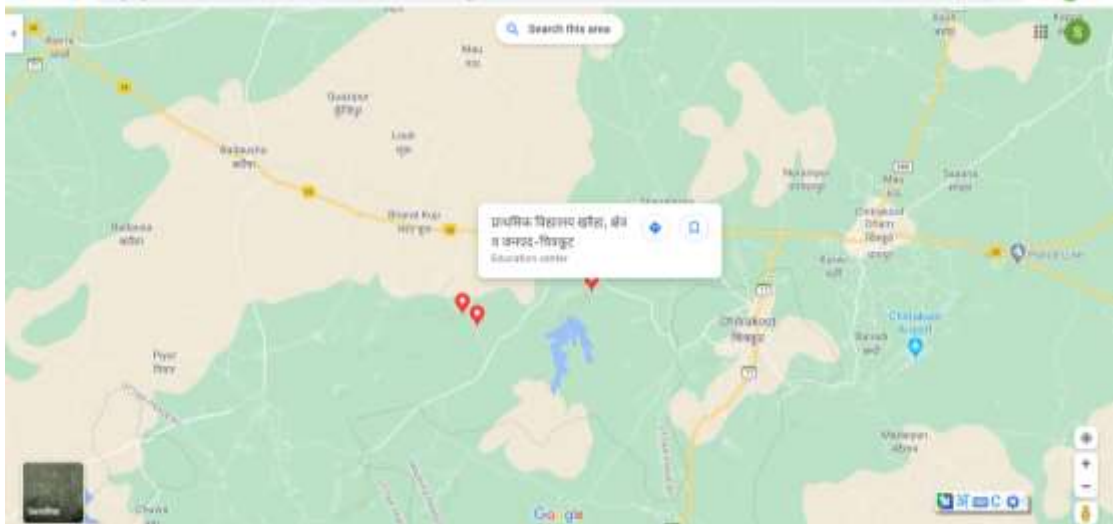
चित्र संख्या 4.25 प्राथमिक विद्यालय खरैहा गूगल मैप
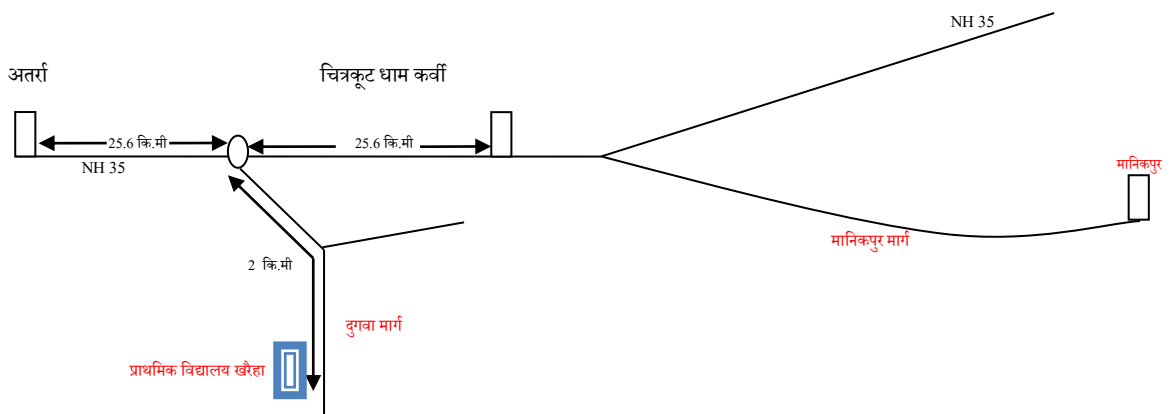
चित्र संख्या 4.26 प्राथमिक विद्यालय खरैहा अवस्थिति मानचित्र

विद्यालय परिवार

प्रधानाचार्य- श्री दयाशंकर सिंह (B.sc, M.A, B.Ed) कार्यरत-28-12-2005

सहायक अध्यापक- श्री विकास पाठक

शिक्षा मित्र- श्रीमती संगीता जायसवाल
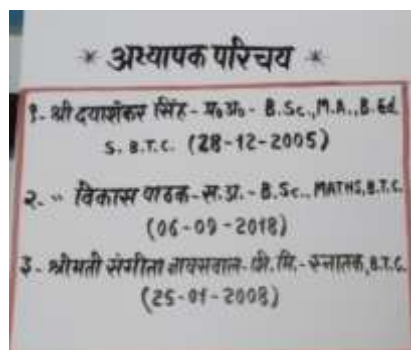
चित्र संख्या 4.27 विद्यालय परिवार

विद्यालय की विशिष्टताएं- यह विद्यालय अन्य कार्य दिवस की भाँती रविवार को भी उसी प्रकार कार्य करता है जैसे अन्य कार्य दिवस की तरह| यह कार्य वे 2007 से चला रहे हैं, इस कार्य में उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पढ़ा सभी प्रकार की समस्याओं का सामना करते हुए उन्होंने आज विद्यालय को नया रुख प्रदान कर दिया है| यह एक ऐसा विद्यालय अगर कोई व्यक्ति इस विद्यालय में जाता है तो प्रधानाचार्य जी कभी भी उसे बिना भोजन कराये जाने नहीं देते हैं|

रविवार को विद्यालय खोलने का उद्देश्य- रविवार को विद्यालय खोलने का उद्देश्य यह है कि, यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र का है, आर्थिक आभाव के कारण माँ-बाप शिक्षा नहीं दे पाते| लेकिन हम पूरी तरह बाध्य नहीं करते हैं, की बालक विद्यालय प्रतिदिन आये बस केवल वह सप्ताह में एक दिन विद्यालय आये और शिक्षा ग्रहण करे व भी केवल रविवार को जिससे शिक्षा का स्तर और भी अच्छा हो| यह विद्यालय रविवार को खुलने के कारण विशिष्ट ख्याति प्राप्त की है|

छात्र नामांकन- 2005 में छात्र नामांकन 17 था जो, आज बढ़ कर 176 है, जिनमें लगभग 160 छात्र प्रतिदिन उपस्थित होते हैं|

पुरस्कार

- 2015-16 में उत्कृष्ट विद्यालय पुरस्कार, लखनऊ में वेसिक शिक्षा मंत्री एवं डायरेक्टर के द्वारा दिया गया जिसमें 1 लाख 20 हजार रुपये पुरस्कार के रूप में मिले थे|
- 2018 में प्रधानाचार्य को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्य शिक्षक पुरस्कार दिया गया|

चित्र संख्या 4.28 राज्य शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करते हुए

- यह विद्यालय जल संरक्षण प्रतियोगिता में 5 साल लगातार प्रथम स्थान प्राप्त कर रहा है, जल संरक्षण ही नहीं बल्कि स्लोगन, भाषण व पेन्टिंग में भी स्थान प्राप्त कर रहा है|
- 22 जुलाई 2019 को जनपद स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राथमिक विद्यालय खरैहा ने प्राप्त किया|

चित्र संख्या 4.29 विद्यालय के समस्त कार्यक्रम की गतिविधियाँ

4.4 पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला, क्षेत्र-रामनगर (चित्रकूट)

चित्र संख्या 4.30 पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला

पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला की स्थापना 1995 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश केचित्रकूट जिले के रामनगर ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 6 से 8 तक की शिक्षा दी जाती हैं। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता है। इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 6 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर / टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी का स्रोत पम्प हैं और यह कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों व लड़कियों के अलग-अलग शौचालय है जो कार्यात्मक है। स्कूल में एक खेल का मैदान है। स्कूल में एक पुस्तकालय है और उसके पुस्तकालय में 102 पुस्तकें हैं।

अवस्थिति- उत्तर प्रदेश केचित्रकूट जिले के रामनगर ब्लॉक में स्थित है।

अक्षांश- 25.3111111 देशांतर- 81.1491944
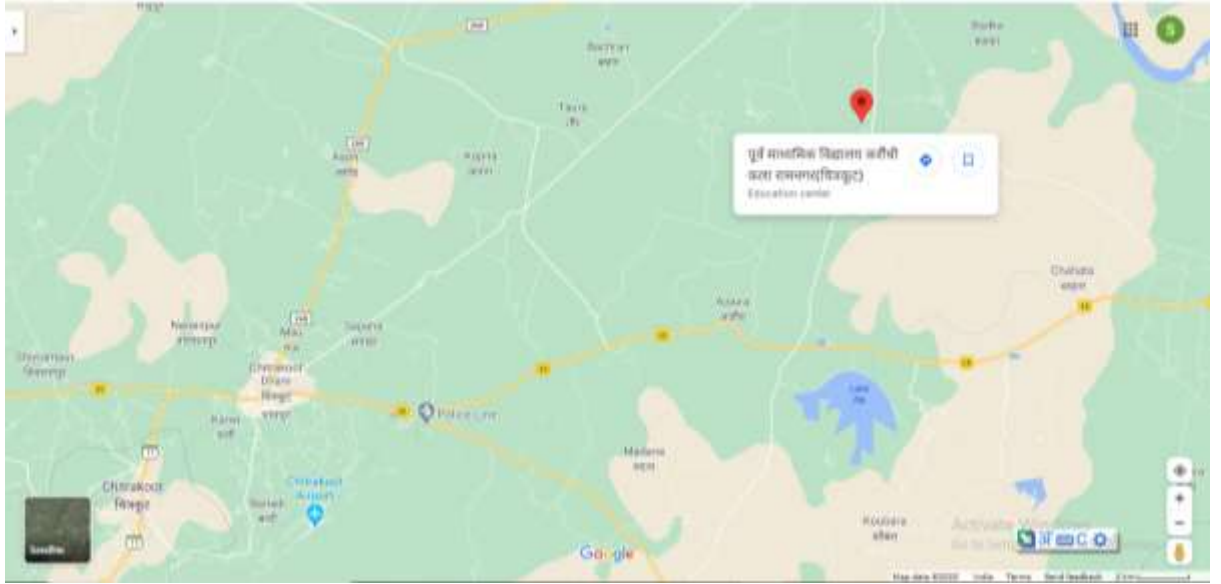
चित्र संख्या 4.31 पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला गूगल मैप
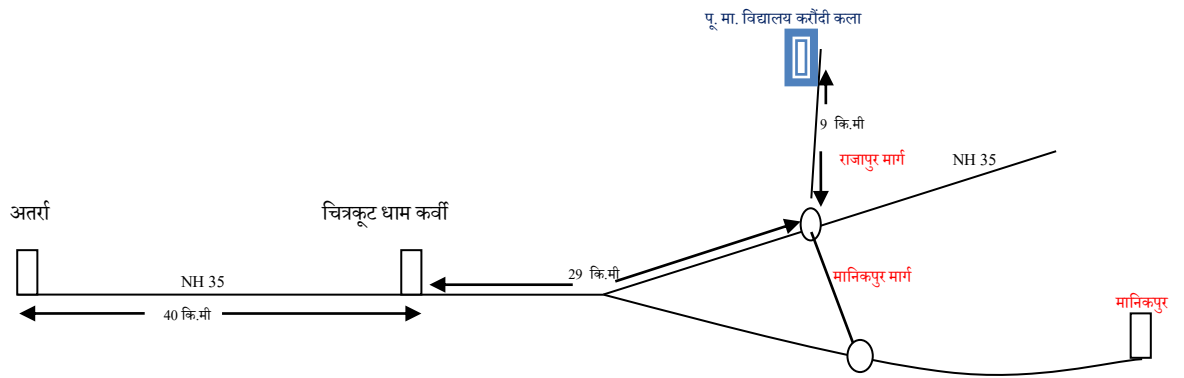
चित्र संख्या 4.32 पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला अवस्थिति मानचित्र

स्थापना- पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला की स्थापना 1995 में हुई थी|

विद्यालय परिवार-

चित्र संख्या 4.33 पूर्व प्रधानाचार्य (मुंशी) पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी

प्रधानाचार्य- शिव कृपाल सिंह (पी.टी. अध्यापक)

सहायक अध्यापक- महेंद्र राजपूत, नादीन मिश्रा

विद्यालय की विशिष्टता- यह विद्यालय पी.टी में पिरामिड बनाते हैं| इस विद्यालय में पीरमिड का निर्माण केवल लड़कियों के द्वारा कराया जाता है, इसमें 16-18 लड़कीयों का एक समूह होता है| इस पिरामिड में जो लड़की सबसे ऊपर होती है, वह पी.टी करते नजर आती है| यह कार्य प्रधानाचार्य एवं पूर्व प्रधानाचार्य (मुंशी) मिल कर करते हैं| यह विद्यालय जनपद में पी.टी में प्रथम आने के कारण विशिष्ट ख्याति प्राप्त कर रहा है|

चित्र संख्या 4.34 पी.टी समूह

उपलब्धि-

- ✓ यह विद्यालय मण्डल में टॉप आता है- चरखारी, अतर्रा, बाँदा में भी टॉप किया था|
- ✓ दो साल लगातार बाँदा मण्डल में प्रथम स्थान प्राप्त किया

4.5 पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया, क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट

चित्र संख्या 4.35 पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया

पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया की स्थापना 2007 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश केचित्रकूट जिले के रामनगर ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 6 से 8 तक की शिक्षा

दी जाती हैं। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता है। इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 6 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर / टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी का स्रोत आरओ लगा हैं और यह कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों व लड़कियों के अलग-अलग शौचालय एवं दिव्यांग बालकों के लिए शौचालय कि व्यवस्था है, जो कार्यात्मक है। स्कूल में एक खेल का मैदान है। स्कूल में एक पुस्तकालय है और उसके पुस्तकालय में 300 पुस्तकें हैं। स्कूल में कंप्यूटर एडेड लर्निंग लैब है।

अवस्थिति- यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के रामनगर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।

अक्षांश- 25.195391 **देशांतर-** 80.9506693
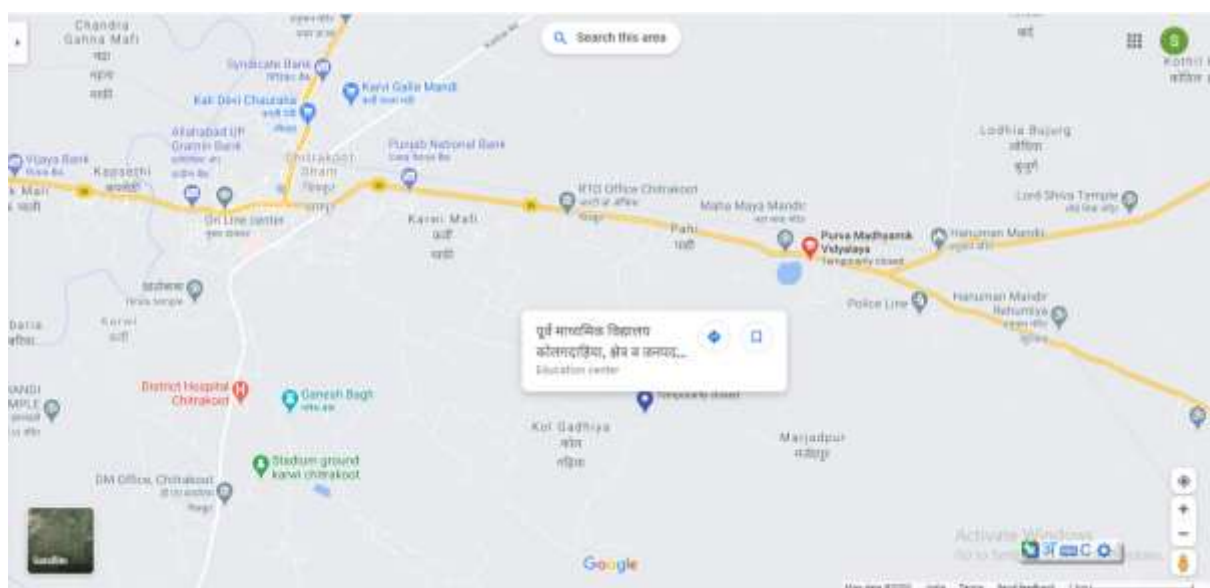
चित्र संख्या 4.36 पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया गूगल मैप
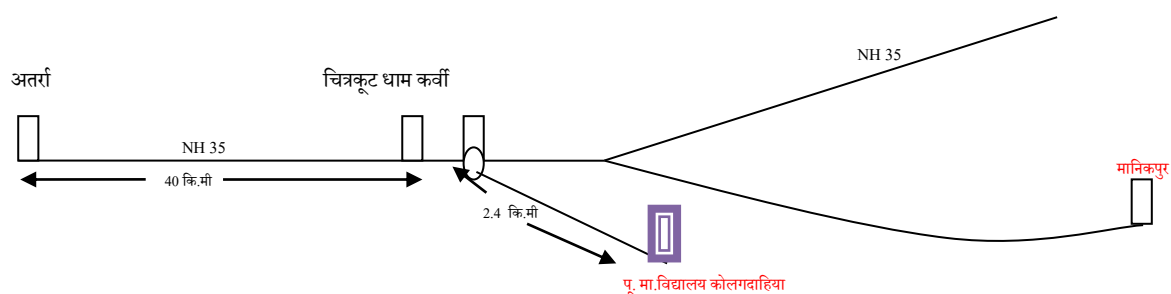
चित्र संख्या 4.37 पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया अवस्थिति मैप

विद्यालय परिवार

चित्र संख्या 4.38 प्रधानाचार्य- अशर्फी लाल सिंह

प्रधानाचार्य- अशर्फी लाल सिंह(M.A, B.T.C)

कार्यभार-23जनवरी 2014

सहायक अध्यापक- अंजना सिंह(M.Sc, B.T.C), ऋतु सिंह(B.A, B.Ed), सलमा खातून(B.A., B.T.C), ज्योति शिवहरे(B.A., B.T.C)

परिचारक- संजय सिंह (8th)

विद्यालय की विशिष्टताएं- यह विद्यालय जनपद चित्रकूट का ही नहीं बल्कि पुरे उत्तर प्रदेश का प्रेरणा का श्रोत रहा| हम कह सकते हैं, कि उत्तर प्रदेश में विद्यालयों की कायाकल्प योजना का प्रारम्भ इसी विद्यालय को माना जाता है| यह उत्तर प्रदेश का पहला परिषदीय विद्यालय है, जिसमें दिव्यांग बालकों के लिए शौचालय की व्यवस्था है| इस विद्यालय का वातावरण बहुत ही सुन्दर एवं स्वच्छ है| विद्यालय में कम्प्यूटर लैब व स्मार्ट क्लास की भी व्यवस्था है| पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोलगदाहिया कई पुरस्कार प्राप्त कर विशिष्ट ख्याति प्राप्त कर रहा है|

पुरस्कार

- 5 सितंबर 2016 को विद्यालय स्वच्छता पुरस्कार तत्कालीन जनपद चित्रकूट डी.एम. मोनिका रानी के द्वारा दिया गया|

चित्र संख्या 4.39 विद्यालय स्वच्छता पुरस्कार-2016

- 5 सितंबर 2017 में प्रधानाचार्य के उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कार, तत्कालीन जिलाधिकारी श्री शिवाकांत द्विवेदी एवं बेसिक शिक्षा अधिकारी के द्वारा दिया गया|

चित्र संख्या 4.40 उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कार

- जनपद चित्रकूट का स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017 दिया गया|

चित्र संख्या 4.41 स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017

पुस्तकालय- इस विद्यालय के पुस्तकालय में लगभग 300 पुस्तकें हैं|

चित्र संख्या 4.42 पुस्तकालय

स्मार्ट क्लास- इस विद्यालय में स्मार्ट क्लास की भी व्यवस्था जिससे विद्यार्थियों को सिखाना आसान हो जाता है| स्मार्ट क्लास की दीवारों को स्मार्ट क्लास में उपयोग होने वाली सभी शिक्षण सहायक सामाग्री को दर्शाया गया है, जैसे-कम्प्यूटर के पार्ट, गूगल, फेसबुक, एम एस ऑफिस, वर्ड, एक्सल, क्रोम आदि के बारे में बताया गया है|

चित्र संख्या 4.43 प्रोजेक्टर

चित्र संख्या 4.44 स्मार्ट क्लास शिक्षण सहायक सामग्री

4.6 पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1, मानिकपुर (चित्रकूट)

चित्र संख्या 4.45 पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1

पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1 की स्थापना 1967 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 6 से 8 तक की शिक्षा दी जाती हैं। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता था, वर्तमान में यह अंग्रेजी माध्यम में चल रहा है। इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। स्कूल में सरकारी भवन है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 4 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर / टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी के लिए आरो की सुविधा है जो कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों के लिए तीन शौचालय है और लड़कियों के लिए तीन शौचालय जो कार्यात्मक है।

स्कूल में एक खेल का मैदान नही है। स्कूल में शिक्षण और सीखने के उद्देश्यों के लिएकंप्यूटर हैं और सभी कार्यशील हैं। स्कूल में कम्प्यूटर एडेड लर्निंग लैब है।

अवस्थिति- यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।

अक्षांश-25.1136352 **देशांतर-** 81.0777072

चित्र संख्या 4.46 पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1, गूगल मैप
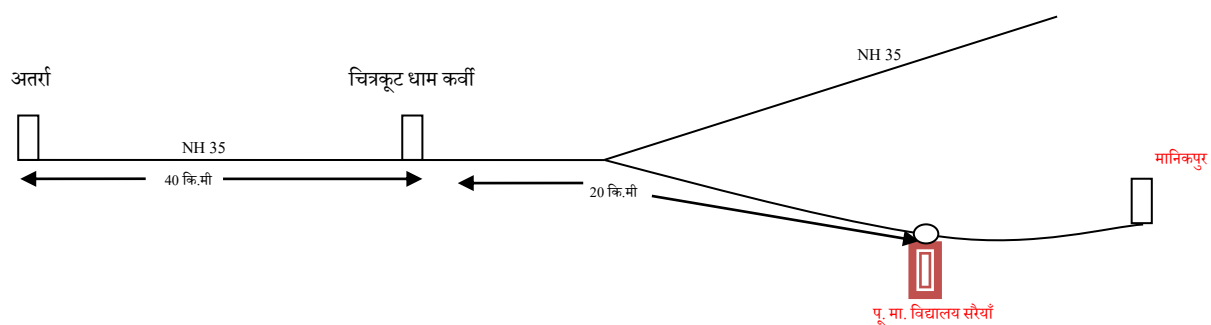
चित्र संख्या 4.47 पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1, अवस्थिति मानचित्र

छात्र नामांकन

2011 में विद्यालय में छात्र नामांकन केवल 39 था, जिसमें लगभग 10-15 छात्र ही विद्यालय आते थे| आज यह स्थिति परिवर्तित हो गई है, आज नामांकन संख्या बढ़ कर 171 हो गई है जिसमें लगभग 160 छात्र प्रतिदिन विद्यालय में उपस्थित होतें हैं|

चित्र संख्या 4.48 प्रधानाचार्य (उमा शंकर पाण्डेय)

विद्यालय परिवार

प्रधानाचार्य- उमा शंकर पाण्डेय (कार्यभार- 11अप्रैल 2011)

सहायक अध्यापक- रमा निवास विश्वकर्मा, श्रीमती श्रद्धा गुप्ता, हरेन्द कुमार

अनुदेशक- जितेन्द्र सिंह, धनराज सिंहम, नितिन सिंह

चित्र संख्या 4.49 विद्यालय परिवार

विद्यालय की विशिष्टताएं- यह विद्यालय जनपद चित्रकूट का ही नहीं बल्कि पुरे उत्तर प्रदेश का प्रेरणा का श्रोत है| इस विद्यालय में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिस कारण 2016 में इसको उत्तर प्रदेश का पहला व भारत का 27वाँ विद्यालय स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार मिला| इस विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना होती है, और प्रार्थना के बाद प्रतिदिन सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों को प्रसाद के रूप में किशमिश दि जाती है| इस विद्यालय में छात्र कक्षा में प्रवेश करने से पहले अपनी चरण पादुकाओं को बाहर ही क्रमबध्य उतार कर कक्षा में प्रवेश करते हैं| इस विद्यालय में 2012 में ही हैण्डवाश के लिए वाशबेशिन व आर.ओ. लग गया था| यह जनपद चित्रकूट का पहला ऐसा विद्यालय है जिसमें

स्माक्लास सौर ऊर्जा के माध्यम से चलाई जाती है व विद्यालय परिषर में उपयोग होने वाली समस्त विद्धुत संचालित वस्तुएं सौर ऊर्जा का माध्यम से चलाई जाती हैं| पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1, स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार-2016 उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त का विशिष्ट ख्याति प्राप्त कर रहा है|

पुरस्कार

- स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार-2016, जनपद चित्रकूट में प्रथम स्थान|
- स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार-2016 उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान|
- स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार भारत में 27वें स्थान प्राप्त करने पर तत्कालीन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावेड़कर द्वारा 50000 रु० तथा प्रशस्ति पत्र दिया गया|
- पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1 को उसके उत्कृष्ट कार्य के लिए भी पुरस्कार दिया गया|
- 2017 में जनपद चित्रकूट का स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार मिला|

चित्र संख्या 4.50 स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार-2016 उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान

चित्र संख्या 4.51 स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार-2016, जनपद चित्रकूट में प्रथम स्थान

चित्र संख्या 4.52 उत्कृष्ट कार्य के लिए

चित्र संख्या 4.53 जनपद चित्रकूट का स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार-2017

विद्यालय का वातावरण- विद्यालय का वातावरण अत्यंत सुन्दर व मनोहर है| विद्यालय में कई प्रकार के पौधे लगाये गए है, व विद्यालय की साफ़-सफाई का बहुत ध्यान रखा जाता है|

चित्र संख्या 4.54 विद्यालय का वातावरण

विद्यार्थी सहभागिता

- एथलेटिक गोला फेंक में स्टेट प्रथम स्थान- संजय
- एकीकृत प्रतियोगिता 2019 में- सिमरन देवी, काजल, मनीषा ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया|
- जनपद स्तर पर 2017 में क्यूज प्रतियोगिता तृतीय स्थान- रजनी
- प्रतिभा खोज परीक्षा 2018 में जनपद में 10 विद्यार्थियों ने टाप किया|
- रास्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा 2018 में तृतीय स्थान-हरिशरण

4.7 पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा, क्षेत्र- मानिकपुर (चित्रकूट)

चित्र संख्या 4.55 पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा

पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा की स्थापना 1884 में हुई थी और इसका प्रबन्धन शिक्षा विभाग करता है। यह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 6 से 8 तक की शिक्षा दी जाती हैं। यह विद्यालय हिन्दी माध्यम में चलता है| इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरू होता है। स्कूल में सरकारी भवन है। विद्यालय के निर्देशात्मक उद्देश्यों के लिए 4 क्लासरूम हैं। सभी क्लासरूम अच्छी स्थिति में हैं। इसमें गैर-शिक्षण गतिविधियों के लिए 2 अन्य कमरे हैं। स्कूल में हेड मास्टर / टीचर के लिए एक अलग कमरा है। स्कूल में

इलेक्ट्रिक कनेक्शन है। स्कूल में पीने के पानी के लिए आरो की सुविधा है जो कार्यात्मक है। स्कूल में लड़कों के लिए दो शौचालय है और लड़कियों के लिए दो शौचालय की व्यवस्था है, जो कार्यात्मक है। स्कूल में खेल का मैदान है। स्कूल में एक पुस्तकालय है और उसके पुस्तकालय में 102 पुस्तकें हैं।

अवस्थिति- यह उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के मानिकपुर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।

अक्षांश- 25.1656398 **देशांतर-** 81.0993325

चित्र संख्या 4.56 पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा, गूगल मैप
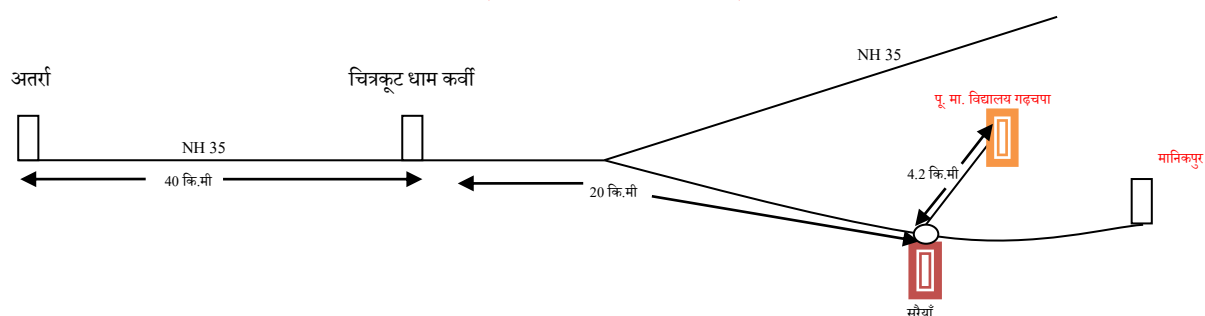
चित्र संख्या 4.57 पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा, अवस्थिति मानचित्र

विद्यालय परिवार

चित्र संख्या 4.58 प्रधानाचार्य-हरी शंकर त्रिपाठी

प्रधानाचार्य- श्री हरी शंकर त्रिपाठी

सहायक अध्यापक- श्री बिहारी लाल, बृजेश सिंह, नरेंद्र कुमार तिवारी, हरेंद्र कुमार

अनुदेशक- असफाक खां (कम्प्युटर), पुरुषोत्तम नारायण(खेल), अमित कुमार सिंह(कला)

विद्यालय की विशिष्टताएं- यह विद्यालय जनपद चित्रकूट का एक प्रेरणा का श्रोत है| इस विद्यालय ने कई पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं जैसे- स्वच्छ विद्यलाय पुरस्कार, विद्यालय में कक्षा की सर्वश्रेष्ठ उपस्थिति पुरस्कार, बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता, क्षेत्रीय मिनी बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया और उसमें स्थान भी प्राप्त किया| यह विद्यालय जनपद चित्रकूट एक ऐसा विद्यालय है, जिसने अभी तक खेल में अपना स्थान जनपद में सबसे ऊपर रखा है| पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा, खेल में अच्छे प्रदर्शन के लिए विशिष्ट ख्यति प्राप्त कर रहा है|

छात्र नामांकन- पहले की अपेक्षा आज छात्र नामांकन संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है|

पुरस्कार

- स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017
- 20वीं क्षेत्रीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता मानिकपुर (2016-17)- उप विजेता
- 32वीं राज्य स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता (2018-19)- उप विजेता
- क्षेत्रीय मिनी बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता मानिकपुर (2019-20)- उप विजेता
- विद्यालय में कक्षा की सर्वश्रेष्ठ उपस्थिति पुरस्कार

चित्र संख्या 4.59 स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017

चित्र संख्या 4.60 20वीं क्षेत्रीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता- उप विजेता

चित्र संख्या 4.61 32वीं राज्य स्तरीय बेसिक बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता उप विजेता

चित्र संख्या 4.62 क्षेत्रीय मिनी बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता-उप विजेता

चित्र संख्या 4.63 सर्वश्रेष्ठ उपस्थिति पुरस्कार

विद्यालय का वातावरण- विद्यालय का वातावरण बहुत ही सुन्दर एवं स्वच्छ है| विद्यालय की दीवारों कई प्रकार की कलाकृतियाँ प्रस्तुत की गई हैं जैसे- DRDO, सौर परिवार, नृत्य, भाषा, राज्य, राजधानी आदि का चित्र पर्स्तुत किया गया है|

चित्र संख्या 4.64 डी,आर.डी,ओ

चित्र संख्या 4.65 सौर परिवार

चित्र संख्या 4.66 नृत्यांगना

चित्र संख्या 4.67 राज्य, राजधानी

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

- ❖ निष्कर्ष
- ❖ शैक्षिक उपादेयता
- ❖ अध्ययन के सुझाव
- ❖ भावी शोध हेतु सुझाव

बिना शिक्षा प्राप्त किये कोई व्यक्ति
अपनी परम ऊँचाइयों को नहीं छू सकता.
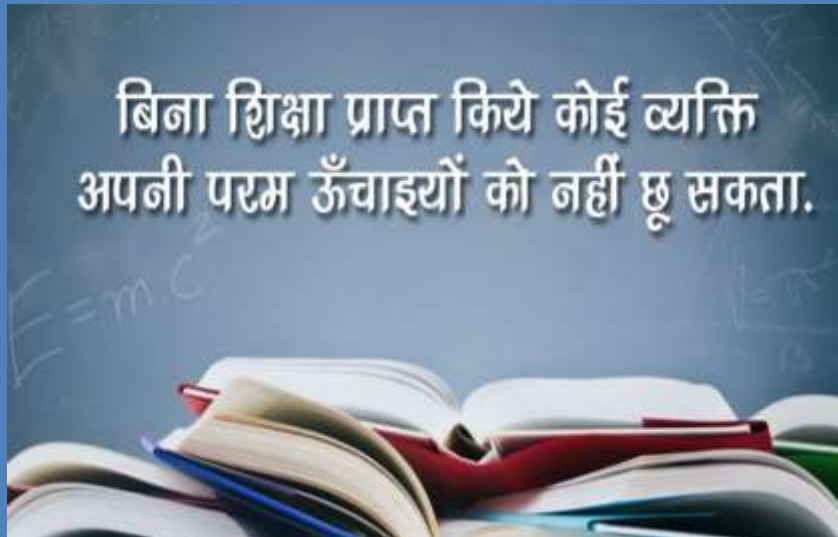
पंचम अध्याय

निष्कर्ष तथा सुझाव

5.1 निष्कर्ष

एक उत्तम शोध कार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष और विधियों के सम्यक प्रयोग एवं तर्कसंगत व्याख्याओं पर आधारित होते हैं| उनमें वस्तुनिष्ठता होती है| वह अपने निष्कर्ष के द्वारा ही अपने शोध कार्य को अंतिम रूप प्रदान कर सकता है या तो कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बिना निष्कर्ष के निकले उसके शोध कार्य का अपूर्ण माना जाता है|

जिस प्रकार किसी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व उद्देश्य की आवश्यकता होती है| बिना उद्देश्यों के कोई कार्य सफल नहीं माना जा सकता, ठीक उसी प्रकार शोध कार्य के पूर्ण हो जाने पर निष्कर्ष आवश्यक होते हैं और उन्हीं प्राप्त निष्कर्षो के माध्यम से ही शोध कार्य को शैक्षिक उपयोगिता के सम्बन्ध में आवश्यक सुझाव दिए जा सकते हैं|

- विद्यालय में खेल के मैदान की कमी है, किसी-किसी विद्यालय में तो खेल के मैदान ही नही हैं|
- विद्यालय आने-जाने के लिए वाहन की सुविधा नहीं है|
- कई विद्यालय ऐसे हैं, जिनमें पेयजल के लिए आरो की सुविधा उपलब्ध नहीं है|
- कई विद्यालय में शिक्षकों की कमी के कारण शिक्षा में गुणवत्ता नहीं है|
- छात्र नामांकन में बढ़ोत्तरी हुई, पर गुणवत्ता में नहीं|
- कई ऐसे विद्यालय हैं, जहाँ प्रोजेक्टर तो है, पर प्रोजेक्टर चलते नहीं हैं|
- कम्प्यूटर तो है, पर चलते नहीं हैं|
- कुछ विद्यालय में कमरे की कमी के कारण छात्र नामांकन में कमी है|
- अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय के माध्यम से बच्चों शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का कार्य किया जा रहा है, एवं वंचित बालकों को शिक्षा के साथ जोड़ा जा रहा है|
- परिषदीय विद्यालयों का लाभ सही रूप से लोगों तक नही पहुँच पाता है, इसलिए कुछ अनुकरणीय विद्यालय इस कार्य के रहें हैं|
- अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय के माध्यम से बच्चों में शिक्षा एवं अन्य कार्य क्रियान्वयन हो रहे हैं|

5.2 शैक्षिक उपादेयता

- चित्रकूट जनपद में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आभाव है| प्राथमिक व उसके ऊपर की शिक्षा यहाँ उपेक्षा का शिकार है| परिषदीय विद्यालय बच्चों के लिए अपनी भूमिका का ठीक-ठीक निर्वाहन नहीं कर पा रहा है|
- परिषदीय विद्यालयों में आवासीय सुविधा देकर शिक्षा से जोड़ना होगा|
- वर्तमान शिक्षा परिषदीय विद्यालय अनुकरणीय खोज की तरह कार्य कर रहे हैं|

5.3 अध्ययन के सुझाव

शिक्षकों के लिए सुझाव

- परिषदीय विद्यालय के शिक्षकों को अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय के शिक्षकों से प्रशिक्षण लेना चाहिए|
- परिषदीय विद्यालय में शिक्षकों के लिए कम्प्यूटर की व्यवस्था होनी चाहिए|
- शिक्षकों के स्व" अधिगम वाली कक्षाओं को पढ़ाना चाहिए|
- शिक्षकों को छात्रों के दत्त कार्य, आदि का ममूल्यांकन करना चाहिए|

प्रशासन हेतु सुझाव

- सभी पाठ्यक्रमों में स्मार्ट क्लास को सामिल करना चाहिए|
- प्रशासन को सभी स्कूलों के लिए एक निश्चित संख्या में शिक्षण-सहायक सामग्री की व्यवस्था करनी चाहिए|

विद्यालय हेतु सुझाव

- विद्यालय को अपना पूरा कार्य सभी शिक्षकों से करवाना चाहिए|
- प्रत्येक विद्यालयों कों इंटरनेट मुफ्त करना चाहिए|
- विद्यालयों को समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए|

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- जनपद चित्रकूट के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन की तरह ही अन्य जिलों के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय का अध्ययन किया जा सकता है|
- अनुकरणीय परिषदीय व अनुकरणीय सामान्य विद्यालय के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है|
- अनुकरणीय व सामान्य विद्यालय का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है|
- अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय होने पर शिक्षा में सुधार पर अध्ययन किया जा सकता है|
- परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों में कुण्ठा, दुश्चिर्यता के स्तर का अध्ययन किया जा सकता है|
- परिषदीय विद्यालयों के बालक और बालिकाओं, की उपलब्धि, उपस्थिति, अपव्यय व अवरोधन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है|
- अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय का प्रदेश व्यापी अध्ययन किया जा सकता है|
- परिषदीय विद्यालयों के बालक और बालिकाओं के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक स्तर का अध्ययन किया जा सकता है|

संदर्भ ग्रंथ सूची

चित्रकूट

<https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A5%82%E0%A4%9F_%E0%A4%9C%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A4%BE>

परिषदीय विद्यालयों की समस्याएं

<https://swatantraprabhat.com/post/prathmik-vidhalay-me-samsyaon-ki-bharmaar>

अनुकरणीय

<https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A3>

परिषदीय विद्यालय

<https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AF>

यादव, नरेंद्र कुमार सिंह(2000)| अनुसूचित जाती के संदर्भ मने प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति: एक अध्ययन| पी.एच.डी-शिक्षाशात्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

<http://hdl.handle.net/10603/10650>

भट्ट, प्रभा(2016)| *माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विध्यार्थियों की समस्या समाधान की योग्यता पर बुद्धि,आत्मसंकल्पना, समयोजन तथा तार्किक योग्यता का प्रभाव*| पी.एच.डी-शिक्षाशात्र, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल तिबरुवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

<http://shodhganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/handle/10603/198945>

रोशनी(2017)| अध्यापक शिक्षा के नवाचार एवं उनकी चुनौयियों का राजस्थान के संदर्भ में विश्लेषण का अध्ययन| पी.एच.डी-शिक्षाशात्र, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/289595

बरनवाल जयशंकर(2006)| ग्रामीण विकास में नवाचार की भूमिका: “तहसील मेहननगर का एक भौगोलिक विश्लेषण” , पी.एच.डी-भूगोल, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

http://hdl.handle.net/10603/179710

चित्रकूट जनपद में परिषदीय विद्यालय की स्थिति

<https://www.jagran.com/uttar-pradesh/chitrakoot-12247156.html>

चित्रकूट जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय

<https://schools.org.in/uttar-pradesh>

प्राथमिक विद्यालय गड़रियन पुरवा, खरौंध क्षेत्र-मानिपुर (चित्रकूट)

<https://schools.org.in/chitrakoot/09410503201/pv-kharaundh.html>

प्राथमिक विद्यालय मानिकपुर रूरल क्षेत्र-मानिपुर (चित्रकूट)

<https://schools.org.in/chitrakoot/09410507202/pv-manikpur-rural.html>

पूर्व माध्यमिक विद्यालय करौंदी कला क्षेत्र-रामनगर (चित्रकूट)

<https://schools.org.in/chitrakoot/09410400402/pmv-khajuriha-kala.htm>

पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरैयाँ-1 मानिकपुर (चित्रकूट)

<https://schools.org.in/chitrakoot/09410501903/pmv-saraiyan.html>

पूर्व माध्यमिक विद्यालय गढ़चपा क्षेत्र-मानिपुर (चित्रकूट)

<https://schools.org.in/chitrakoot/09410502303/pv-ganchapa.html>

परिशिष्ट

✶ जनपद चित्रकूट के परिषदीय विद्यालय

(क) जनपद चित्रकूट के कर्वी ब्लाक के परिषदीय विद्यालयों की सूची

क्र.सं.	परिषदीय विद्यालय
1	PV BHEEKHAMPUR
2	PMV BAIHAR
3	PV BAIHAR
4	PV CHHATAN
5	SHARDA ADARSH GYANSTHALI BHARATKOOP
6	PV BHARTHAUL
7	SHARDA INTER COLLEGE GAUTAM BUDDHA NAGAR BHARATKOOP
8	PV MAWAI PAHARA
9	PV DADHIHA
10	P.V. DUGAWAN
11	PMV BHEESHAMPUR
12	PMV BHARTHAUL
13	PV PAHARA-2
14	PV PAHARA-1
15	PV MUKUNDPUR
16	PV AMRAWA
17	PV DHOKAHA PURWA
18	PV CHHIWALAHA
19	PV SEHRA PAHARA
20	PV KHAIRAHA
21	PV BHARATKOOP
22	PV BIHARA-2
23	LATE SMT SUKHD
24	PV KODHAN PURWA
25	PV MAINHAI
26	PV BANDARI
27	PMV KHAMHARIYA
28	PV BADAHA PURWA
29	PMV KHOH KA PURWA
30	PV KOLHUWA MAFI
31	PV MANPUR
32	PV GHURETANPUR-2
33	G.I.C. GHURETANPUR
34	PV GHURETANPUR-1
35	PV SILKHORI
36	PV DHOLBAJA
37	PV KHOH KA PURWA
38	PV NAVGHAT
39	SRI CHITRAKOOT HANUMAT SANSKRIT MADHYAMIK VIDYALAYA VAMANPUR
40	PV SABHAPUR

41	PV BAGAIHA
42	PV KHAMHARIYA
43	PMV BANDARI
44	**PMV KOLGADHAHIYA**
45	PMV MAINHAI
46	PV BARACH
47	PV BAMANPUR
48	PMV BARACH
49	PMV KANYA MAINHAI
50	PV BAGLAN
51	PV GIRDHARI KA PURWA
52	PMV GHURETANPUR
53	PV PANIHAN PURWA
54	PMV SILKHORI
55	PMV HINAUTA MAFI
56	PMV RAMYAPUR
57	PV BASIYA PURWA
58	PV KHUMANI PURWA
59	PV DAHINI
60	PV SHIVMANGAL PURWA
61	PV ITKHARI
62	PV ALMA PURWA
63	PMV BARAMAFI
64	PV BARAMAFI
65	PMV BHAMBHAUR
66	SAINT THOMAS PMV KHUTAHA
67	PV BHAMBHAUR
68	PV MACHHARIHAN PURWA
69	PV RAMYAPUR
70	PV USRA PURWA BHAMBHAUR
71	PMV SHIVMANGAL PURWA
72	PV MAHUTA RUPAULI
73	PV PAHADIYA BUJURG
74	PMV ITKHARI
75	PV RAM SAJEEVAN KA PURWA
76	PV USARI PURWA
77	PV KADARGANJ
78	PV GADHIGHAT
79	PV GENDA PURWA
80	PV HINAUTA MAFI
81	PV BHUISUDHA PURWA
82	PV CHUNKAI PURWA
83	PV RAIYA PURWA
84	PMV GADHIGHAT
85	PV DOMAN KHERA
86	PMV PAHADIYA BUJURG
87	PV SADHARI KA PURWA
88	PV MAKARI PAHARA

89	PV NETA KA PURWA
90	PMV KHUMANI PURWA
91	PMV DAHINI
92	PMV DOMAN KHERA
93	PMV ALMA PURWA
94	PV MANDIL KA PURWA
95	PMV DILAURA
96	PV NARAYANPUR
97	PMV CHANDRA GAHANA
98	PV BHONDU KA PURWA
99	PMV KHER
100	PMV KHAJURIHA KALA
101	PV REHUNTA
102	PV LODHAN PURWA
103	PMV GOPALPUR
104	PV CHANDRA GAHANA-2
105	PV DASU KA PURWA
106	LOKHIT PMV SABHAPUR TARAO
107	PV KAPSETHI
108	PV BAHADURPUR
109	PV TIKURA
110	PV PURWA TARAUNHA-1
111	PV GOBARIYA
112	PV RANIPUR BHATT
113	PV DHARMPURAHA PURWA
114	PV PURWA TARAUNHA-2
115	KALIKA DEVI BAL VIDYALAYA
116	PV MALKANA
117	PMV REHUNTA
118	PV CHANDRA GAHANA-1
119	PMV PURWA TARAUNHA
120	PV AMANPUR
121	LAXMI PRASAD BHARDWAJ PV
122	PMV AMANPUR
123	PV SABHAPUR TARAO
124	PMV LODHAN PURWA
125	KAMAD GIRI VIDYAPEETH CHAKLA RAJRANI
126	PV BHAMBHAI
127	PV GOPALPUR
128	PV AHAMAD GANJ
129	PMV RANIPUR BHATT
130	PMV BHAMBHAI
131	PV KULI TALAIYA
132	PV KATRAGUDAR
133	PV KHAJURIHA KALA
134	PV KHUTAHA
135	PV DILAURA
136	PMV KHUTAHA

137	KAMAD GIRI VIDYAPEETH AWASIYA PMV
138	PV KHER
139	PV KANTHIPUR
140	PV RAGAULI-2
141	PMV BANWARIPUR
142	PV KOTA
143	PMV NAIDUNIYA
144	PV LAL BIHARI KA PURWA
145	PV RAGAULI-1
146	PV AMARPUR
147	C.S.J. MAHARAJ PMV RAGAULI
148	PMV KASAHAI
149	PV NAI DUNIYA KASAHAI
150	PMV LAUDHIYA KHURD
151	PV KUJJAN PURWA
152	PV GADARIYAN PURWA (RAGAULI)
153	PV SAPAHA
154	SUBHASH CHANDRA BOSE PV
155	PMV RAGAULI
156	PV LAUDHIYA KHURD
157	PMV SAPAHA
158	KANYA PMV KASAHAI
159	CSM ADARSH PV RAGAOLI
160	PMV KUNJAN PURWA
161	PMV KANTHIPUR
162	PMV ITARAUR BHEESHAMPUR
163	PV LAUDHIYA BUJURG
164	LATE DHARMA SINGH PV ITRAUR BHISHAMPUR
165	PV KASAHAI-1
166	PV BANWARIPUR
167	PV KASAHAI-2
168	PV ITARAUR BHEESHAMPUR
169	PV KUMHARAN PURWA
170	PMV SIDHHAPUR
171	PMV SHEETALPUR TARAUHAN
172	PMV BANADI
173	PV MARJADPUR
174	PV AHIRAN PURWA (BANADI)
175	GOVT. HIGH SCHOOL SEMARIYA CHARANDASI
176	PV AHIRAN PURWA (REHUNTIYA)
177	PV DHOBIN PURWA
178	DR B.R. AMBEDKAR PUBLIC SHOOL KARWI
179	PV REHUNTIYA
180	PV GADHEEWA
181	PV KACHHAR PURWA
182	PV SIDHHAPUR
183	PV BANADI
184	PMV KHOH

185	PV KOL GADAHIYA
186	PV GADAHIYA
187	ABHYUDAY PUBLIC SCHOOL
188	PMV REHUNTIYA
189	PMV SEMARIYA CHARANDASI
190	PMV GADHEEWA
191	PV SEMARIYA CHARANDASI
192	PV KHOH-1 (ENGLISH MEDIUM)
193	PV KHOH-2
194	PV SEETELPUR TARAUHAN
195	PMV KOL GADAHIYA
196	PMV KACHHAR PURWA
197	PV KALOOPUR
198	PMV KALOOPUR PAHI
199	PV MUSLIM PURWA
200	PV VINAYAKPUR
201	PMV KHOHI
202	PV LUDAHA
203	PMV BALAPUR MAFI
204	PMV SANGRAMPUR
205	PM J H SCHOOL KHOHI
206	PMV KUSHWAHA BASTI
207	PV MANOHAR GANJ
208	PV RAJAULA
209	PV THARRI
210	PMV LUDAHA
211	PV SANGRAMPUR
212	PV BABUPUR
213	PMV SEMARIYA JAGANATHVASI
214	PMV THARRI
215	PV KUSHWAHA BASTI
216	PMV CHITARA GOKULPUR
217	PV ARKHAN PURWA
218	SHIVAJI UCHCHATAR MADHYAMIK VIDYALAYA CHITRA GOKULPUR
219	PV BHAGANPUR
220	PMV MANOHAR GANJ
221	PV CHITARA GOKULPUR (ENGLISH MEDIUM)
222	PV BARAMPUR
223	PV CHAUDHARI KA PURWA
224	PV KHOHI-2
225	PM MEMORIAL SCHOOL KHOHI
226	PV MUKWAN PURWA
227	PV SEMARIYA JAGANNATHVASI
228	SETH RADHA KRISHNA PODDAR INTER COLLEGE
229	PV KHOHI-1
230	PV BALAPUR MAFI
231	PV BANDARKOL
232	PMV RANIPUR KHAKI

233	PV CHHAPARA MAFI
234	PV RANIPUR KHAKI
235	PV DUBARI
236	PMV SONEPUR
237	DR BHEEM RAO AMBEDKAR PMV BARWARA
238	PV BARWARA-1
239	PV SONEPUR
240	PMV BANKAT
241	PMV CHHIPANI BAHAR KHEDA
242	PV CHHIPANI BAHAR KHEDA
243	PV BANKAT
244	PV LODHAWARA
245	PV BANDHUIN-1
246	DESHRAJ KRISHAK UCHCHATAR MADHYAMIK VIDYALAYA KANDI KHERA
247	PMV BHARKORRA
248	PV TAMRABANI
249	COMPOSITE PV LODHAWARA
250	DR RAM MANOHAR LOHIYA PV
251	PV KARWI MAFI
252	SHRI BAL HANUMAN KRISHAK PV KANDI KHERA
253	PMV BANDHUIN
254	COMPOSITE PMV LODHAWARA
255	PMV CHUNAHA PURWA
256	PV BHEETA KHERA
257	PV KANDI KHERA
258	PV BHARKORRA
259	PV ERAN MAFI
260	DR. BHEEMRAO AMBEDKAER INTER COLLEGE BARWARA
261	PV SEHRA PURWA
262	PMV DUBARI
263	PMV KANDI KHERA
264	PMV LODHAWARA
265	PV SHEETALPUR KONHAS
266	PV BARWARA-2
267	PMV BARWARA
268	PV BANDHUIN-2
269	PV PATIYA
270	PMV PARSAUNJA
271	PV SULTAN PURWA
272	PV BUDDHU KA PURWA
273	R.S. PUBLIC SCHOOL
274	PMV SAKRAULI
275	PMV KHAIRI
276	PV BHOLA KA PURWA
277	PMV KAHETA MAFI
278	PV KAUNHARI
279	KANYA PMV PARSAUNJA
280	PV SAKRAULI

281	PV CHILLA MAFI
282	PMV CHILLA MAFI
283	LATE MAHENDRA PRATAP SINGH JHS PARSAUNJA
284	PV SHIV CHARAN KA PURWA
285	PMV SAIPUR
286	MAA MANDAKINI PUBLIC SCHOOL PARSAUNJA
287	PV BALIYA PURWA
288	KAMAYANI PUBLIC SCHOOL
289	PV PARSAUNJA-2
290	PV SAIPUR
291	PT. RAJ NARESH VIDYA MANDIR
292	INDRA VIJAY J.H.S. PARSAUNJA
293	PMV KAUNHARI
294	PV KHAIRI
295	PV KAHETA MAFI
296	PV PARSAUNJA-1
297	AWADHESH KUMAR UCHCHATAR MADHYAMIK VIDYALAYA PARSAUNJA
298	PMV SEMARDAD
299	PV CHAKALA PURWA
300	RATAN NATH INTER COLLEGE RASIN
301	PV KORIN PURWA
302	PV BHAWANIPUR
303	PV MAHADEVAN
304	PMV KOLAUHAN
305	PV KOLAUHAN-1
306	KANYA PV SEMARDAND
307	PV KOLAUHAN-2
308	PMV MAHADEWAN
309	PMV BHAWANIPUR
310	PV FATA PURWA
311	KANYA PMV RASIN
312	PV CHHIWALAHA PURWA
313	PV ALKHOO KHOD
314	GOPAL HINDI SANSKRIT MAHAVIDYALAYA RASIN
315	R.N. DUBEY MONTE. VIDYALYA RASIN
316	PV TAMRAR
317	P. R. U. VIDYAPITH GAUSHALA RASIN
318	PV RASIN-2
319	PV GOUSALA
320	PV BHANIHAI
321	PV FALGO KA DERA
322	PV RASIN-1
323	PMV GAUSHALA RASIN
324	PV BHAGWATPUR
325	ADARSH GEETA SIKSHA NIKETAN
326	PMV DHAURAHI MAFI
327	PV DHANI KA PURWA
328	PV BAJANI PURWA

329	PV CHAK BHATAURA
330	PMV GONDA
331	PV GONDA
332	BHAWANPAL SINGH PUB SCHOOL AKBARPUR
333	PMV PATAUDA
334	PV BARACHHA PURUWA
335	PV LOOK
336	SHARDA ADARSH PMV BHARATKOOP
337	PMV KORARI
338	PV PATAUDA
339	PMV AMILIHA
340	GOVT. HIGH SCHOOL RAULI KALYANPUR
341	PV PANDEY PURWA
342	PMV MAU TITIHARA
343	PV SUDINPUR
344	PV BUDDHA NAGAR
345	PV MAU
346	PV KARARI
347	PV BHARATKOOP STATION
348	PMV BHARATKOOP
349	PMV KARARI
350	PV RAULI KALYANPUR-1
351	PV DURJAN PURWA
352	PMV KHARAEYA
353	PV KATHAR PURWA
354	PV GADARIYAN PURWA (RAULI)
355	PV DHAURAHI MAFI
356	PMV PANDEY PURWA
357	PV BEENDAR PURWA
358	PMV GOBARIYA
359	PMV RAULI KALYANPUR
360	PV TITIHARA
361	PV AMILIHA
362	PV LYONJHA DHAURAHI
363	SARSWATI SHISHU MANDIR BHARATKOOP
364	PV RAULI KALYANPUR-2
365	PV MIRIYA PURWA
366	PV KORARI
367	GOVT. HIGH SCHOOL BHARATKOOP
368	PV KAREDI PURWA
369	PV KABARA PURWA
370	PV GADARIYAN PURWA (TITIHARA)
371	PMV BEENDAR PURWA
372	PMV DURJAN PURWA
373	PMV SUDINPUR
374	PV KAJIPUR
375	PMV TITIHARA
376	PV GOBARIYA BUJURG

377	PV AKBARPUR
378	PV DHATURAHA PURWA
379	PV RAHUNI PURWA
380	NAVIN GYAN STHALI PV
381	PMV MACHHARIHA
382	PV BEERA
383	PMV BHAISAUNDHA
384	PMV LAINA BABA SARKAR
385	PV TARAON
386	PMV SHIVRAMPUR
387	PMV TARAON
388	PV GAHUNI PURWA (PADARI)
389	PV MAHADEV KA PURWA
390	PV BHAISAUNDHA-1
391	PARAM VIDYA MANDIR PMV SHIVRAMPUR
392	PMV KANYA SHIVRAMPUR
393	PV AMEEN KA PURWA
394	PV RAIPURWA MAFI
395	PV KALLA
396	SHYAMA JHS BHAISAUNDHA
397	PV PATHRAUNDI
398	PV BHAISAUNDHA-2
399	PV KANDAILI
400	PMV SAHADEV KA PURWA
401	PV PANDARI
402	SADASHIV ADARSH GYANSTHALI
403	PV DAFAI
404	PV ARKHAN PURWA (BAGLAI)
405	KENDRIYA VIDYALAYA SHIVRAMPUR
406	GOVT. HIGH SCHOOL SHIVRAMPUR
407	PMV RAIPURWA MAFI
408	KANYA PMV BHAISAUNDHA
409	SRI SHIV SAHAY VIDYA MANDIR
410	K.G.B.V. SHIVRAMPUR
411	PV SAHADEV KA PURWA
412	PV NAKEEB KA PURWA
413	PV THEEKA KA PURWA
414	PV BANSHIPUR
415	PV SHIVRAMPUR-1
416	PV BHAGAT KA PURWA
417	PV SHIVRAMPUR-2
418	PV BHARAIHA PURWA
419	PMV BAGALAI
420	PMV PANDARI
421	PV HARIJAN PURWA
422	PMV BHARAIHA PURWA
423	N.P.A.S.V.MANDIR SHIVRAMPUR
424	SARSAWTI BAL VIDYA MANDIR SHIVRAMPUR

425	SHIVAJI SIKSHA SANSTHAN PV KALLA
426	PV MACHHARIHA
427	PMV KALLA
428	PV CHAKALA GURUBABA
429	PV BAGALAI

(ख) जनपद चित्रकूट के मानिकपुर ब्लाक के परिषदीय विद्यालयों की सूची

क्र.सं.	परिषदीय विद्यालय
1	PV BAGREHI-1
2	PMV BAGREHI
3	PMV CHARDAHA
4	PMV UDAKI
5	PMV KANYA AGARHUNDA
6	PV BAGREHI-2
7	JAN KALYAN SIKSHAN SANSTHAN PV ARWARA
8	PV LAHRI PURWA
9	PV CHARDAHA
10	PV UDAKI
11	PMV LALAPUR
12	PMV AGARHUNDA
13	PV GADARIYAN PURWA (BAGREHI)
14	SRI MAHARSHI BALMIKI ASHRAM DHARM SANGH MADHYAMIK VIDYALAYA LALAPUR
15	PV ARWARA
16	PV BHOLA KA PURWA
17	PV GAUHAI PURWA
18	PV AGARHUNDA-2
19	PV LALAPUR
20	PV AGARHUNDA-1
21	PMV ARWARA
22	PV GIRDHARA PURWA
23	PV BIRURAM KA PURWA
24	PV BYUR-2
25	PV BAGHWARA
26	PV DEVKALI
27	PV BASILA
28	PV ATRAULI
29	PV DHOBIN PURWA
30	PV JAMHILI
31	KRISHAK INTER COLLEGE BHAUNRI
32	PMV BYUR
33	PMV KOTHILIHAI
34	PV BHAUNRI-2
35	SHANKAR PMV DEVKALI
36	PV AKBARIYA

37	PV BYUR-1
38	PV KOTHILIHAI
39	PMV BAGHWARA
40	PV RAMJUPUR
41	PV GADDHUPUR
42	PV MUNAUHA
43	PMV ATARAULI
44	PV GETA KA PURWA
45	PV BARKOT
46	PMV KUI
47	PMV BHAUNRI
48	PMV BASILA
49	BHOLE ASHRAM PUB. SCHOOL DIRIY
50	PMV KANYA BHAUNRI
51	LATE DEVMATI PUBLIC SCHOOL BHAUNRI
52	PV DARIYA PUR
53	PV BARTHALA KA PURWA
54	SISHU SIKSHA SADAN BHAUNRI
55	PV KUI
56	PV BHAUNRI-1
57	PV DAHALI PURWA
58	SHANKAR INTER COLLEGE DEVKALI
59	PV KALWARA PURWA
60	PV PAIKAURAMAFI
61	PV BAGHAUNA
62	PMV ENCHAWARA
63	PV TAKHTUPUR
64	PV GADARIYAN PURWA (KHARAUNDH)
65	PMV CHAR
66	PV ENCHAWARA-1
67	PV BHAGAT SINGH NAGAR
68	PV RAMPUR TARAUHA-1
69	PMV KHANCH
70	SS SAHABDEEN GARG SISHU SIKSHA
71	PV CHAR-1
72	SRI RAM JANKI SANSKRIT MADHYAMIK VIDYALAYA CHAR
73	PMV RAMPUR TAROUNAH
74	PV NAI BASTI
75	PV GAJATA
76	PV KHARAUNDH
77	PV CHAR-2
78	SMT.GOVINDI DEVI SMANDIR TIKAR
79	SITA RAM ANU. P V SEMARDAHA
80	TYAGI INTER COLLEGE ENCHAWARA
81	PV KUKARHAI
82	KAMADGIRI PUBLIC SCHOOL ECHAWARA
83	PMV LAUGHATA
84	PV TIKARI

85	PV LAUGHATA
86	PMV TAKHTUPUR
87	PV PAPRAUNHI PURWA
88	PV SEMARDAHA
89	RAM SAJEEVAN SISHU SIKSHA NIKETAN
90	PV ENCHAWARA-2
91	PMV SEMARDAHA
92	PV KITHANI
93	PV RAMDAS KA PURWA
94	PV RAMPUR TARAUHA-2
95	PV BAUNA PURWA
96	PMV BHAGAT SINGH NAGAR
97	GOVT. HIGH SCHOOL ETAWA DUDAILA
98	PMV MARKUNDI
99	PV BAMBHIYA
100	PV BHENA
101	PV JAMUNIHAI
102	LATE DADU BHAI CHATURVEDI INTER COLLEGE MARKUNDI
103	PV CHHOTI BAMBHIYA
104	PV TIKARIYA
105	PV BAGRAHA
106	PV DODA MAFI
107	PV CHHOTI PATIN
108	PV NERUVA SOCIETY
109	PV KHADARA PURWA
110	PMV AMCHUR NERUVA
111	PMV ETAWA DUDAILA
112	PV MANGAVA
113	PV KIHUNIYA
114	PMV BADI PATIN
115	PV ETAWA DUDAILA
116	PV KUSAMI
117	MAHARSHI MAKANDEY PMV MARKUNDI
118	PMV BAMBHIYA
119	PV MUTWAN
120	PMV TIKARIYA
121	PV AMCHUR NERUVA
122	PV BADA KOLAN
123	PV MARKUNDI-1
124	PV DUDAULI
125	PV MARKUNDI-2
126	PMV DODA MAFI
127	PV BADI PATIN
128	PV JAGANNATHPURAM
129	PV KAUBARA
130	PMV BARACHI
131	DR BHEEM RAO AMBEDKAR PV PKHAR
132	PV LAUDHIYA MAFI

133	PV MAGARHAI
134	K.D.A.S. SADAN PV AHIRA
135	PV BANDHA
136	PV POKHARI PURWA
137	PV PANDEY PURWA
138	SARDAR BB PATEL UCH. MADH. VIDYA. RAIPURA
139	PV GAHORA KHAS
140	PV GAHORA PAHI
141	PV DESHAH
142	PV PACH PURWA
143	PV CHIFULA
144	PV TALA PURWA
145	PMV DHAN
146	PV DHAN
147	PV AHIRA-2
148	PMV CHIFULA
149	PV RAIPURA
150	SARDAR BB PATEL PMV RAIPURA
151	KANYA PMV RAIPURA
152	PV GAURIYA
153	PMV KAUBARA
154	PV AHIRA-1
155	PV BATKHARA
156	LATE RAJARAM SINGH PMV BARHAT
157	PMV PUCH PURWA
158	PV BARACHI
159	PMV GAURIYA
160	PV RAMSEWAK KA PURWA
161	PMV BATKHARA
162	PMV KANYA BARHAT
163	MAHARSHI BAL. VIDYALAY RAIPURA
164	LATE GAYA PRASAD NUR. SCHOOL
165	PMV LAXMANPUR
166	PMV JAROMAFI
167	PV GOPIPUR
168	PV RAMPUR
169	PV MANDIR TOLA
170	PV CHHERIHA DANDI
171	PV KALYANPUR
172	PV CHHERIHA BUJURG
173	PMV CHULHI
174	DEEN DAYAL GYAN NIDHI
175	PV CHHERIHA KHURD
176	PV SEKHAPUR
177	PV LAXMANPUR
178	PV KARAUNHA
179	SETH TIRATH PRASAD PMV
180	PV NAAGAR

181	PV DANDI KOLAN
182	PV JAROMAFI
183	PV KALYANPUR KHAS
184	PV BARAHMAFI
185	PMV KARAUNHA
186	PMV KALYANPUR
187	PMV RAMPUR
188	PV CHULHI
189	PMV MANDIR TOLA
190	KOL PV NANDVANIYA
191	PMV CHHERIHA KHURD
192	PMV BARAHMAFI
193	PV BANDHAWA PURWA
194	GOVT. HIGH SCHOOL DADARI MAFI
195	PMV RUKMA KHURD
196	PV CHHOTI BILHARI
197	PV BANDHIN
198	PV SEHRIN
199	PV RUKMA KHURD
200	BAJRANG PMV SAPAHA
201	PV NAYA PURWA
202	PMV SEHRIN
203	PV BAMBHANI PURWA
204	PMV BAHIL PURWA
205	PV TEDHI PURWA
206	PV BELAUHAN PURWA
207	PV BADI MADAIYAN
208	GOVT. HIGH SCHOOL BADI MADAIYAN
209	PV SAPAHA
210	PV BARUI
211	PMV KAILAHA
212	SARDAR BALLABH BHAI PATEL PUBLIC SCHOOL LANKA PURWA DADARI MAFI
213	PV NAUBASTA
214	PMV KARKA PADARIYA
215	LATE RAMDAS PATEL PUBLIC SCHOOL
216	PMV BAMBHANI PURWA
217	PV GONDA
218	KOL PV PADARIYA
219	BAJRANG INTER COLLEGE SAPAHA
220	PMV LAKHANPUR
221	PV BAHIL PURWA
222	PV RUKMA BUJURG
223	PV LAKHANPUR
224	PMV BADI MADAIYAN
225	PV KARKA PADARIYA
226	PV FULI PURWA
227	PV PACHPEDHA
228	PV JHEELANG COLONY

229	PV CHHEETUPUR
230	PMV NAI DUNIYA
231	PV KHANCH
232	PMV DADARI MAFI
233	PV CHHOTI MADAIYAN
234	PV DADARI MAFI
235	PV KAILAHA
236	PV PATERIYA
237	PV KAKARHULI
238	PV DHOBHARA
239	PV BAI KA PURWA
240	PMV BAGEECHA PURWA
241	PV NAYA CHANDRA
242	PMV KANYA GANCHAPA
243	SARSWATI SHISHU MANDIR POKHARI PURWA
244	**PV GADARIYAN PURWA**
245	**PMV SARAIYAN**
246	PV BAJAHA PURWA
247	PMV PATERIYA
248	PV AHIRI
249	**PV GANCHAPA**
250	PMV GADARIYAN PURWA
251	PV HANUVA-1
252	PV PAWARI KALAN
253	PMV MADANA
254	PMV HANUVA
255	AMBEDKAR VV MANDIR KABARA
256	PMV MARA CHANDRA
257	PV DHAUHA PURWA
258	SRI DHARMA SANSKRIT UCHCHATAR MADHYAMIK VIDYALAYA SARAIYAN
259	PV JARKA PURWA
260	PV RAMPURIYA
261	RAMLAL SHASTRI PMV POKHARI PURWA
262	PV GADA KHAN
263	PMV KANYA SARAIYAN
264	PV SARAIYAN-2
265	PV GADHI KALAN
266	PV BADI POKHARI
267	RAJ SIKSHA NIKETAN PMV SARAIYAN
268	PV SARAIYAN-1
269	PV MUSLIM PURWA
270	PV CHHERIHAI
271	PV MARA CHANDRA-2
272	PV HANUVA-2
273	PV MARA CHANDRA-1
274	PV DUDHVANIYA
275	PMV GURAULA
276	SMT PAKAUVA DEVI SANSKRIT MAHAVIDYALAYA MANIKPUR

277	PV MANIKPUR-2
278	PV BAGDARI
279	PATHA PMV GURAULA
280	PMV BAGDARI
281	SUNRISE PUBLIC SCHOL UMARI
282	PV NIHI
283	PV MANIKPUR-1
284	PV CHUREH KESARUVA
285	**PV MANIKPUR RURAL**
286	PMV NIHI
287	GOVT. HIGH SCHOOL ELHA
288	PV HARIJANPUR
289	PV GOBARHAI
290	PV SUVARGADHA
291	RAJKIYA ASHRAM PADDHATI VIDYALAYA MANIKPUR
292	SARSWATI GYAN MANDIR MANIKPUR
293	COMPOSITE PMV UMARI
294	PV SARHAT
295	PV PURANA MANIKPUR
296	G.G.I.C MANIKPUR
297	PMV HARIJANPUR
298	JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA MANIKPUR
299	COMPOSITE PV UMARI
300	PV BADHAIYAN
301	MAHARAJA CHATRA SHAL NURSERY S
302	PV SUKHRAMPUR
303	PV HELA
304	KANYA PMV MANIKPUR
305	PMV UMARI
306	PV DARAI
307	PV ELHA BADHAIYAN
308	PV KEKARAMAR
309	PV UMARI
310	BRILLIANT PUBLIC SCHOOL MANIKPUR
311	PV GURAULA
312	PMV SARHAT
313	MAHARAJA CHATRA SAL PMV MANIKP
314	DR BHIMRAO AMBEDKAR VIDYALAYA
315	PV CHARAIYA
316	PV DANDI CHAMRAUNDI
317	PMV ELHA
318	MAKTAB DARSHAH ISHLAMI MANIKPU
319	JAGRAN PUBLIC SCHOOL MANIKPUR
320	PV PATA
321	PV BELAHA
322	K.G.B.V. MANIKPUR
323	ADARSH INTER COLLEGE MANIKPUR
324	CKT MISSION SCHOOL

325	NEW PUBLIC SCHOOL MANIKPUR
326	BASUDEV PUBLIC SCHOOL
327	SS VIDYA MANDIR MAHABEER NAGAR
328	PV KHICHARI
329	SANT RITA JHS MANIKPUR
330	PMV KEKRAMAR
331	PV GIDURAHA
332	PMV KATARA GIDURAHA
333	PMV RANIPUR
334	SRIST RAJA PV PAKDILPUR GIDURA
335	PV MURKATA
336	PV TEDHAVA
337	PV HARDIHA
338	PMV UNCHADEEH
339	PV HARBHUSAN PURAWA
340	PV UNCHADEEH
341	PV SAKRAUNHA
342	PV CHAMARAUHA
343	PV GADHAWA
344	PV RANIPUR
345	PV PATRAKAR KA PURWA
346	PV AMARPUR
347	PMV KOTA KANDEELA
348	PV KUBARI
349	PV KANDAILA
350	PV MAU GURDARI
351	PMV MAU GURDARI
352	PMV SAKRAUNHA
353	PV KATARA
354	PV JHALMAL
355	PMV CHAMRAUNHA
356	PV KOTA KANDEELA

(ग) जनपद चित्रकूट के रामनगर ब्लाक के परिषदीय विद्यालयों की सूची

क्र.सं.	परिषदीय विद्यालय
1	PT CHHITANI MITANI DUBEY GYAN
2	SRI SANKAT MOCHAN SANSKRIT MADHYAMIK VIDYALAYA CHHEEBON
3	PMV BHADEWARA
4	SARSWATI SHISHU MANDIR CHHEEBON
5	PV KHAJURIHA KHURD
6	PV NONMAI
7	PV CHAHATA
8	PMV RITHI
9	PMV PIYARIYA MAFI

10	MAA KAALI SIKSHA PRASAR VIDYALAYA CHHEEBON
11	PV DEVHATA
12	PV RAMSINGH KA PURWA
13	KANYA PMV CHHEEBON
14	PV SITHI PURWA
15	SRI DANU BABA SANSKRIT MADHYAMIK VIDYALAYA AMWA
16	PMV AMWA
17	PV CHHEEBON-1
18	PV SIKARI
19	PV KURMI PURWA (TIRMAU)
20	PV CHHEEBON-2
21	PV AMAAN
22	PMV SIKARI
23	PV RUPAULI
24	M.D.S. PUBLIC SCHOOL CHHEEBON
25	PV JHANDA PURWA
26	PMV KHAJURIHA KHURD
27	PV TIRMAU
28	PYARI BINDI PHOOL KUMARI PV AMAN CHHEEBON
29	PV AMWA
30	PV TIRMAU-2
31	KANYA PMV RUPAULI
32	PV RITHI
33	PV PIYARIYA MAFI
34	PMV NONMAI
35	GOSWAMI INTER COLLEGE CHEEBON
36	PV BHADEWARA
37	PMV TIRMAU
38	PV KATAIYA KHADAR
39	SANJAY GANDHI PMV HANNA
40	PMV HANNA
41	PV BARACHHI
42	PV PATIYAN PURWA
43	PMV KATAIYA KHADAR
44	PV SIRAWAL-1
45	PV GANESHAN PURWA
46	PMV GOBRAUL
47	PMV BARUWA
48	PMV PIPRAUND
49	PV PIYARIYA KALA
50	PV SHIVLAHA PURWA
51	PMV SIRAWAL
52	PV SILAUTA
53	PV KHERAVA
54	PV CHAK BHADHESAR
55	PMV BALHAURA
56	PMV PIYARIYA KALA
57	PV SUHEL

58	PV HANNA-2
59	PV HANNA-1
60	PV HARIJAN PURWA
61	PV TIKARA
62	PV BALHAURA
63	PV CHANDAHA
64	PV EDAWA PURWA
65	PV SIRAWAL-2
66	PV ATARSUI
67	GOVT. HIGH SCHOOL SIRAWAL
68	PV CHILLA KA PURWA
69	PMV SUHEL
70	PV GANJ
71	PV GOBRAUL
72	PV BARUWA
73	PV PIPRAUND
74	PV BHAWANI PURWA
75	PMV ATARSUI
76	PV BINAURA
77	PV BHAMBHET-1
78	PV KHATWARA-1
79	PV PARAKON
80	MAHADEV SINGH CHANDRAUL INTER COLLEGE
81	PV SOTI PURWA
82	SARSWATI VIDYA MANDIR
83	PV BHAMBHET-2
84	PMV PARAKON
85	PV NADIN KURMIYAN-1
86	PV KUIN
87	SARSWATI SISHU MANDIR NADIN KURMIYAN
88	CENTRAL PUBLIC SCHOOL PARAKON
89	S.M. PUBLIC SCHOOL RAJAPUR
90	MAHADEV SINGH CHANDRAUL PMV NADIN KURMIYAN
91	M D SIKHA NIKETAN RAJAPUR
92	PMV BHAMBHET
93	PMV KARAUNDI KALA
94	PV MISHRA KA DERA
95	PV RAJAPUR-1
96	PV PAIKORA
97	PMV RAGAULI
98	SWAMIDEN PMV KHATWARA
99	G.G.I.C. RAJAPUR
100	PV AZAD PURWA
101	P.K. BABU PUBLIC SCHOOL
102	PV SHIV MOHAN KA DERA
103	PV KHATWARA-2
104	P.K. BABU PMV NADIN KURMIYAN
105	PMV NADIN KURMIYAN

106	PMV CHORAHA BINAURA
107	PV MALWARA
108	PV MAJHGAON
109	PMV KHATWARA
110	JITENDRA PV RAJAPUR
111	PMV RAJAPUR
112	TULSI INTER COLLEGE RAJAPUR
113	SARSWATI GYAN MANDIR RAJAPUR
114	R.K. VIDYA MANDIR RAJAPUR
115	PV ANUSUCHIT BASTI
116	PMV KANYA NADIN KURMIYAN
117	PV RAJAPUR-3
118	PV RAJAPUR-2
119	PV NADIN KURMIYAN-2
120	PV KARAUNDI KALA
121	SARSWATI SISHU MANDIR RAJAPUR
122	SRI TULSI SMARAK SANSRIT MAHAVIDYALAYA RAJAPUR
123	PV RAGAULI
124	K.J.N. H.S. SCHOOL KHATWARA
125	S.H.N.S.S.K.S. SARSWATI VIDYA MANDIR NADIN KURMIYAN
126	SWAMI VIVEKANAND BAL BHARTI RAJAPUR
127	PMV DHADWAR
128	SURAJKALI SHISHU MANDIR PAHADI
129	PV REWARI
130	PV GADARIYAN PURWA
131	JITENDRA PMV RAJAPUR
132	MAHARANI AVANTI BAI SIKHA SADAN
133	PMV BARIYA
134	PMV KANYA RAM NAGAR
135	PMV BHAKHARWAR
136	PV PAHADI
137	PV DADHIYA
138	PV BHAKHARWAR
139	**PMV KARAUNDI KALA**
140	PMV RERUWA
141	PV ARKHAN PURWA
142	MAHAMAYA KANYA PV BARIYA
143	PV RERUWA
144	PV UFRAULI
145	PV KHAJURIHA KALA
146	PMV UFRAULI
147	PMV KOLHUVA
148	MAHATMA JYOTIBA RAO PHULE VIDYALAYA
149	PV BUDHAWAL
150	PV BARIYA
151	PMV RAM NAGAR
152	PV BASINHA
153	PV PIYARI KAGAR

154	PV DHADWAR
155	PV MATIYARA
156	MAHATMA JYOTIBA RAO PHULE PMV
157	PV RAM NAGAR
158	DHIRENDRA PMV RAJAPUR
159	PV DEWASHTHAN KA PURWA
160	PMV LODHAURA
161	PV DEWANI
162	PMV GHUREHATA
163	PV DHAWADA
164	PV MANDIR PURWA
165	PMV AMARPUR
166	PV AMARPUR
167	PMV BASINHA
168	PV BARETHI
169	PV GHUREHATA
170	PMV PAHADI
171	PV SHIROMAN KA DERA
172	PV LODHAURA
173	PV HANUMAN GANJ
174	PMV BISAUNDHA
175	PV DHAUHAI
176	PMV HANUMAN GANJ
177	PV RAUKHARI
178	LATE UPENDRA SRIVASTAVA MONTESORY SCHOOL
179	PV KURMI PURWA (LAURI)
180	PV LAURI-2
181	PV RAMAKOL
182	PV DEUNDHA
183	PV AMIRATI PURWA
184	PV CHAMRAUNHA PURWA
185	PV ITWAN-2
186	P V LOHGADHI
187	PV BELARI
188	PV SINGHPUR
189	PMV DEUNDHA
190	PV JAYANTI BANDH KA PURWA
191	PMV BELARI
192	PV GHUNUWA
193	PV BANDHI
194	LATE GULAB KALI SHIKSHA NIKETTAN
195	PMV KHOR
196	PV RAMPUR-1
197	PV NAKATI PURWA
198	PV KAPURI
199	PV AHIRAN PURWA
200	PV BHAGADA PURWA
201	PV HATHRAJI

202	PV LAURI-1
203	PV NATO KA PURWA
204	PV KOLSA
205	PMV KAPURI
206	PV SUJAN GANJ
207	PV KHOR
208	PV GADARIYAN PURWA
209	PMV GHUNUWA
210	SARSWATI SISHU MANDIR
211	PV KAKARAHULI PURWA
212	SUBHASH INTER COLLEGE ITWAN
213	PMV MAHULIHA
214	PV MAHULIHA
215	PV SHAMBHUPUR
216	PMV BANDHI
217	PMV RAMPUR
218	PV ITWAN-1
219	PV CHUCHURAHA PURWA
220	PV BISAUNDAHA
221	PV RAMPUR-2